लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दांडी

अंक : तृतीय, वर्ष 2019

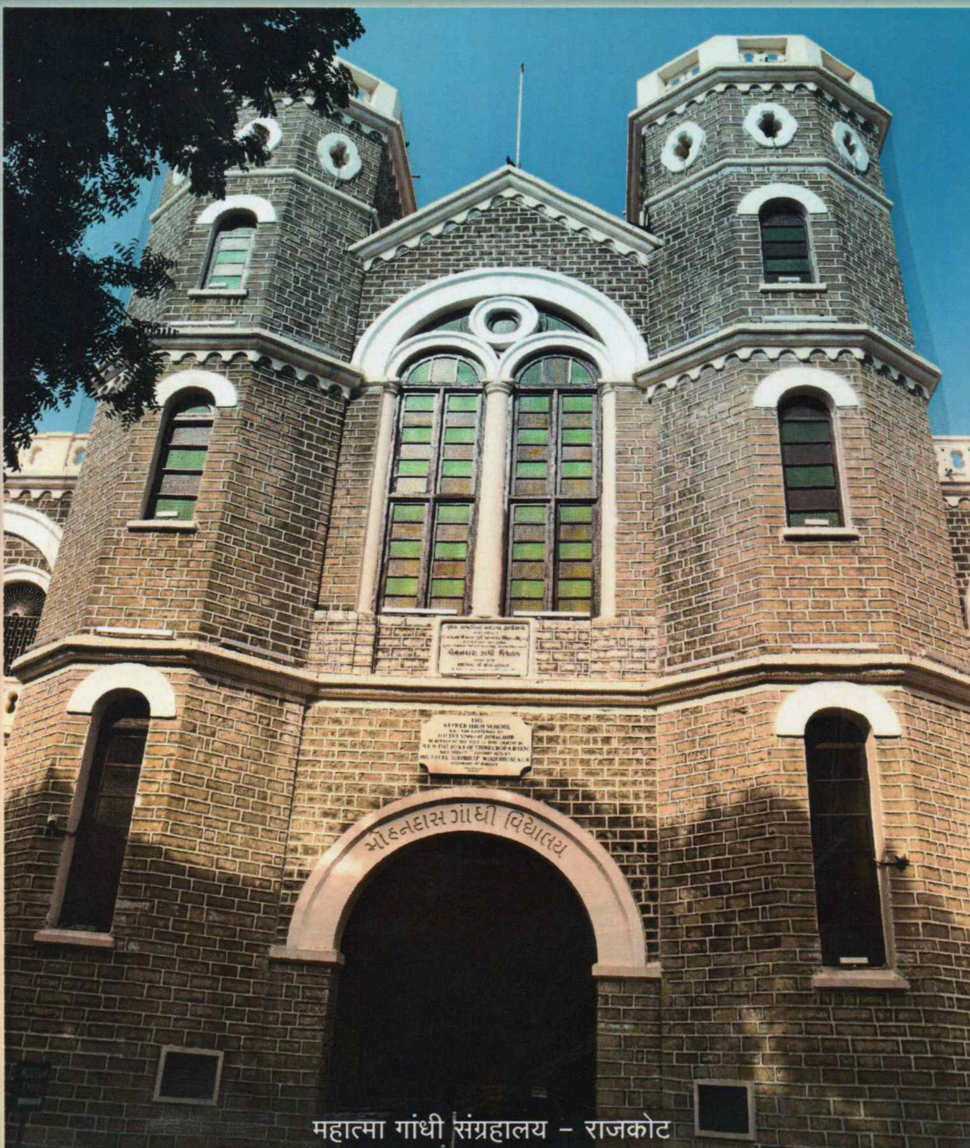

महात्मा गांधी संग्रहालय - राजकोट

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)
गुजरात - राजकोट, 360001

प्रधान महालेखाकार महोदय का सम्बोधन

वरिष्ठ उपमहालेखाकार महोदया का सम्बोधन

माननीय राज्यपाल महोदय श्री ओ. पी. कोहलीजी के समक्ष
लेखापरीक्षा प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए
श्री यशवंत कुमार, प्रधान महालेखाकार
(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा गुजरात)

दांडी परिवार

संरक्षक व सूत्रधार

श्री यशवंत कुमार, प्रधान महालेखाकार

प्रधान संपादक

सुश्री एस.एस.शाह, उप–महालेखाकार/प्रशासन

संपादक

श्री एस.पी.उदानी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
श्री डी.डी.गौड़, हिन्दी अधिकारी

सह–संपादक

श्री नितिन कुमार पुंडीर, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्री प्रदीप सिंह, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

तकनीकी सहायक

श्री शैलेश्वर मलिक, डी.ई.ओ
सुश्री प्रिंसी अग्रवाल, वैयक्तिक सहायक

डिस्क्लेमर:- पत्रिका में दिए गए लेखों की मौलिकता संबंधी ज़िम्मेदारी तथा उनके द्वारा व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है।

हिन्दी वार्षिक पत्रिका 'दांडी' – वर्ष 2019

* अनुक्रमणिका *

क्र.सं.	शीर्षक	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	विवरण	पृष्ठ संख्या
	संदेश	प्रधान महालेखाकार महोदय		00
	संपादकीय	उप–महालेखाकार महोदया/ प्रशासन		00
	हिन्दी पखवाडे की झलकियाँ	हिन्दी अनुभाग की कलम से		00
1.	समसामयिक हिन्दू धर्म एवं सतत विकास के लक्ष्य	श्री यशवंत कुमार	लेख	13-17
2.	महात्मा गांधी की दांडी यात्रा.... एक दृष्टिकोण	सुश्री एस.एस. शाह	लेख	18-19
3.	कुछ पंक्तियाँ...........	श्री एम.वी. शर्मा	कविता	20
4.	गांधीजी की 150वीं जयंती	श्री डी.डी. गौड़	लेख	21-22
5.	गूंज नहीं आवाज बनो	श्री अभिमन्यु सिंह कुंतल	कविता	23
6.	हिन्दी की घटती साख	श्री अनुराग श्रीवास्तव	लेख	24-25
7.	आईना	श्री नितिन सिंह पुंडीर	कविता	26
8.	बाप का खत एक अजन्मी बेटी के नाम	श्री राकेश मीना	लेख	27-28
9.	उसूल ए जिंदगी	श्री प्रदीप सिंह	कविता	29
10.	कारीगर	श्री अभिमन्यु सिंह कुंतल	कहानी	30-31
11.	सिसकते जख्म	श्री सूर्यकांत चौधरी	कविता	32
12.	ग्रामीण जीवन : मानवता एवं सुंदरता का समन्वय	श्री प्रदीप सिंह	लेख	33-35
13.	आज और कल	श्री धर्मेंद्र पवार	कविता	36
14.	जीवन का बोध	श्री उज्जवल रस्तोगी	कहानी	37-38
15.	गुरु बिन ज्ञान नहीं	श्री हितेश कुमार	कविता	39
16.	पृथ्वी ओवरशूट दिवस	सुश्री मोनिका शर्मा	लेख	40-41
17.	वो एक शाम	श्री सूर्यकांत चौधरी	कविता	42

* अनुक्रमणिका *

क्र.सं.	शीर्षक	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	विवरण	पृष्ठ संख्या
18.	नारी मुक्ति	श्री नितिन चौधरी	लेख	43-44
19.	पल–पल बदलती ज़िंदगी	सुश्री ममता	कविता	45
20.	बेटा	श्री डी.के. ओझा	कहानी	46
21.	परिवर्तन	श्री अनुराग श्रीवास्तव	कविता	47
22.	भगवान की सेवा	श्री शैलेश्वर मलिक	लेख	48-49
23.	तिरंगा लहराता है शान से	श्री राममेहर	कविता	50
24.	दहेज प्रथा एक बुराई	श्री प्रीतम	लेख	51-52
25.	आखिर क्यों ?	श्री वी.डी. पंडया	कविता	53
26.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	श्री अश्विन धिनोजा	लेख	54-55
27.	वो सपनों की दुनिया	श्री अभिनव वर्मा	कविता	56-57
28.	हिन्दी का अ–वैश्वीकरण	श्री हरीश कुमार	लेख	58-59

संदेश

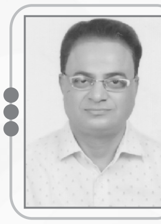

(यशवंत कुमार)
प्रधान महालेखाकार

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'दांडी' के तृतीय अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। 'दांडी' पत्रिका हमारे कार्यालय की रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। कार्यालय पत्रिका के द्वारा हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिलता है। राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास एवं प्रयोग में वृद्धि के लिए यह एक सराहनीय कदम है।

हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय पहचान भी है। अतः अपने कार्यालयीन कार्यो में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करके हमें गौरव महसूस होना चाहिए। कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाते रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं संपादक मण्डल को हृदय से बधाई देता हूँ तथा साथ ही सभी रचनाकारों का अभिनंदन करते हुए यह कामना करता हूँ कि पत्रिका इसी तरह अपने पथ पर अग्रसर होती रहेगी। 'दांडी' पत्रिका का यह अंक शुभकामनाओं के साथ समस्त पाठकों को समर्पित करता हूँ।

(यशवंत कुमार)
प्रधान महालेखाकार

संपादकीय

सुश्री एस.एस.शाह
उप महालेखाकार/प्रशासन

कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'दांडी' का तृतीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। कार्यालय की हिन्दी पत्रिका हिन्दी भाषा के प्रति दृढ़ निश्चय को प्रदर्शित करती है। राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित राजभाषा संबंधी प्रमुख निर्देशों के अनुपालन में हम अपने कार्यालय में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी भाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं तथा हिन्दी भाषा में मौलिक रचनाओं को मूर्त रूप देने एवं पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं।

'दांडी' के पिछले अंक को विभिन्न कार्यालयों से सराहना मिली है। हमारी इस उपलब्धि का श्रेय सभी रचनाकारों, पाठकों, दांडी परिवार के सदस्यों तथा उन सभी को जाता है, जिन्होने पत्रिका की गुणवत्ता बनाए रखने में अपना योगदान दिया।

मैं पत्रिका के संपादक के रूप में समस्त संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा साथ ही यह आशा करती हूँ कि आगामी वर्षो में भी आप अपनी बहुमुखी प्रतिभा से कार्यालय को गौरवान्वित करते रहेंगे। आशा करती हूँ कि पत्रिका का यह अंक भी पाठको को रुचिकर एवं श्रेयस्कर लगेगा तथा वे अपने अमूल्य सुझावों से संपादकीय परिवार को अनुगृहीत करते रहेंगे।

(एस.एस.शाह)
उप महालेखाकार/प्रशासन

हिन्दी पखवाड़ा
दीप प्रज्जवलन समारोह

हिन्दी पखवाड़ा
उद्घाटन समारोह

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(G&SSA तथा A&E)
के संयुक्त
हिन्दी अनुभाग के सदस्य

विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त प्रशंसा पत्र

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा परीक्षा एंव लेखा विभाग

महानिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय, मुम्बई, का कार्यालय,

सी-25, ऑडिट भवन, आयकर भवन के पीछे,
बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051
(EPABX)26571750 Extn.221/242/243246
FAX:2657 2451 / 1737 E – mail – dgacmum@vsnl.com

हिन्दी अनुभाग
Hindi Section
आवक पत्र संख्या 74
Inward Letter No.
दिनांक 14/11/18
Date................

पत्रांक: म.नि.ले.प/कें/रा.भा.अ./ 106

दिनांक 5/11/18

हिंदी
SP. 1259

सेवा में,

कार्यालय प्रधानमहालेखाकार(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)
ऐनेक्सी बिल्डिंग.रेस कोर्स रोड, पोस्ट बैग न. 27,
राजकोट, गुजरात- 360001

विषय:- हिंदी पत्रिका **"दांडी" के द्वितीय अंक** की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया',

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका **"दांडी" के द्वितीय अंक** की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनायें उच्च कोटि की है। विशेषकर श्री एम.वी शर्मा द्वारा लिखित कविता **"यादें"**, सुश्री ममता द्वारा लिखित **"रिश्तो की मंडी"** तथा श्री प्रदीप सिंह द्वारा लिखित **"माँ-ईश्वर की एक अमूल्य रचना"** अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

महालेखाकार (सा. एवं. सा. क्षे.ले.प) गुजरात
Accountant General (G&SSA) Gujarat
12 NOV 2018
राजकोट / Rajkot-360001

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा. क्षे. ले. प.) गुजरात,
ऑडिट भवन, ईश्वर भवन के सामने, कॉमर्स छ रास्ता, नवरंगपुरा,
अहमदाबाद-380009

सं.हि.अ./पत्रिका-अभिमत/फा-250/जा.नं. 52 5/09/18 दिनांकः 04.09.2018

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)
एनेक्सी बिल्डिंग,रेस कोर्स रोड,पोस्ट बॉक्स सं.-27
गुजरात,राजकोट - 360 001

हिन्दी अनुभाग / Hindi Section
आवक पत्र संख्या / Inward Letter No. 20
दिनांक / Date 1/10/18

विषय :- हिन्दी पत्रिका **"दांडी"** के द्वितीय अंक की प्रशंसा हेतु |

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका **"दांडी"** हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है । आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख एवं सुन्दर कवितायें लिखने का सराहनीय प्रयास किया है ।

श्री डी डी गौड द्वारा लिखित **"संघ की राजभाषा नीतिका संक्षिप्त परिचय"**, श्री वी.डी.पंड्या द्वारा लिखित कविता **"अविनाशी"**, सुश्री ममता द्वारा लिखित **"अपाहिज कौन"** और श्री कालूराम द्वारा लिखित **"सकारात्मक विचार -अमूल्य धन"** सराहनीय व प्रशंसनीय हैं।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका **"दांडी"** के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी शुभकामनायें।

भवदीय

4.9.18
हिन्दी अधिकारी

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – द्वितीय का कार्यालय, मध्यप्रदेश

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)-II, Madhya Pradesh

सत्यमेव जयते

हिन्दी अनुभाग
Hindi Section
आवक पत्र संख्या 53
Inward Letter No.
दिनांक 28/8/18
Date................

क्रमांक: हिन्दी कक्ष-2/अभिमत/219 दिनांक : 13.08.2018

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी /हिन्दी कक्ष

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा),

एनेक्सी बिल्डिंग,रेस कोर्स रोड, पोस्ट बैग सं 27,

गुजरात, राजकोट-360001

विषय: आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका " दांडी " की पावती एवं अभिमत ।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं.हिन्दी कक्ष/ हिन्दी पत्रिका/2015-16/4/60 दिनांक: 24.07.2018 के साथ संलग्न हिन्दी पत्रिका " दांडी " के द्वितीय अंक" की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका में समाविष्ट श्री एम. वी. शर्मा की कविता " यादें ", सुश्री ममता का लेख " अपाहिज कौन ", श्री डी.डी.गौड़ का लेख " स्वच्छता अभियान " सहित अन्य लेख एवं कविताएं न केवल उत्कृष्ट हैं अपितु अत्यंत ही सराहनीय हैं ।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक बधाई की पात्र है । पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)

Address : Lekha Bhawan, Jhansi Road, Gwalior-474002
Phone : 0751-2323968
Fax : 0751-2432194

पता : लेखा भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर – 474002
दूरभाष : 0751-2323968
फैक्स : 0751-2432194

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
महाराष्ट्र, नागपूर

सत्यमेव जयते

ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II
MAHARASHTRA, NAGPUR

सं.हिंदी अनुभाग/ प्रतिक्रिया/22/2018-19/जा.क. 63

दिनांक:-21-08-2018

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी (हिन्दी कक्ष),

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (जी. एवं एस.एस.ए.)

राजकोट,गुजरात

विषय:- हिंदी पत्रिका "दांडी" के द्वितीय अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की **हिंदी पत्रिका "दांडी" के द्वितीय अंक** की दो प्रतियां प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट,पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर श्री एम.वी. शर्मा की रचना "यादें", सुश्री ममता की रचना "रिश्तों की मंडी", श्री अनूप कौशिक की रचना "देश में हिंदी का महत्व", श्री सूर्यकांत चौधरी की रचना "बिखरता मैं", श्री प्रदीप सिंह की रचना "साक्षरता की उपयोगिता" आदि उल्लेखनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है । पत्रिका के मुख पृष्ठ पर दांडी मार्च की झांकी प्रस्तुत करता चित्र ध्यान आकर्षित करता है | कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

(वी.एस.रेड्डी)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन',डाक थैली क्र. 220, सिव्हिल लाईन्स, नागपूर-440001
दुरभाष/Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फैक्स /Fax : 0712-2524130

'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
Website :http://agmaha.cag.gov.in
e mail : agaumaharashtra2@cag.gov.in

समसामयिक हिन्दू धर्म एवं सतत् विकास के लक्ष्य

श्री यशवंत कुमार
प्रधान महालेखाकार

आज का हिन्दू धर्म क्या है? आज का हिन्दू पीपल के पेड़ की पूजा करता है। पीपल जो प्रकृति का प्रतीक है। वह उसे आदरणीय तथा पूजनीय मानता है। गाय जो कि सभी जीवों का प्रतीक है वह गाय (गौ माता) की पूजा करता है। अतः हिन्दू सभी जीवों का आदर करता है और उनको पूजनीय मानता है। वह पत्थर में शिव को देखता है तथा शिवलिंग रूपी पत्थर की पूजा करता है। उसके लिये पत्थर में भी ईश्वर का वास है। वह दुर्गा, काली, सरस्वती, सीता, राधा, लक्ष्मी आदि के रूप में स्त्री की पूजा करता है तथा वह स्त्री रूप में शक्ति की उपासना करता है। वह नवरात्र में कन्याओं की पूजा करता है। वह उनमें दुर्गा का रूप देखता है। अतः वह बच्चों में भगवान का रूप देखता है। वह धरती को अपनी माता मानता है। अतः वह पृथ्वी में भी भगवान का वास मानता है और पृथ्वी की पूजा करता है। पृथ्वी प्रकृति का सबसे बड़ा अंग है। वह नदी को माता और भगवान मानता है। अतः वह गंगा, यमुना, नर्मदा आदि सभी नदियों को भगवान का रूप मानकर उनकी पूजा करता है। आज का हिन्दू हिमालय पर्वत में शिव का वास समझता है और पर्वत को शिव का रूप मानता है। अतः वह पर्वत को भी (शिव) भगवान मानकर उसकी पूजा करता है।

वह वानर स्वरूप हनुमान तथा लंबोदर स्वरूप गणेश की पूजा करता है। वह ब्रह्मा, विष्णु, महेश को पूजता है। वह एक ही भगवान के तीनों स्वरूपों ब्रह्मा, विष्णु और शिव तथा शक्ति (दुर्गा) की पूजा करता है। वह विष्णु के सभी अवतारों जैसे – राम, कृष्ण, नरसिंह आदि देवताओं को पूजता है। वह शिव के सभी रूपों तथा शक्ति (दुर्गा) के सभी अवतारों की भी पूजा करता है। अतः आज का हिन्दू प्रकृति के विभिन्न रूपों जैसे– पेड़ (पीपल), पत्थर (शिवलिंग), नदियों, पर्वतों इत्यादि को पूजता है तथा इनमें ईश्वर का स्वरूप देखता है। आज का हिन्दू निर्जीव (पत्थर, नदी एवं पर्वतों) में भी भगवान का रूप देखता है तथा सजीव– वनस्पतियों, बच्चों एवं स्त्रियों में भी भगवान को देखता है एवं उनकी पूजा करता है। आज के

हिन्दू के लिए प्रकृति में ईश्वर का वास है। वह प्रकृति के प्रत्येक स्वरूप को पूजता है। वह पत्थर, नदी, पहाड़, वनस्पतियों, जानवरों इत्यादि की भी पूजा करता है। अतः वह भगवान रूपी नदी को गंदा नहीं कर सकता, भगवान रूपी पर्वत को तोड़ कर नष्ट नहीं कर सकता। वह वनस्पतियों को काट कर नष्ट नहीं कर सकता। वह जीवों के प्रति हिंसा नहीं कर सकता। अतः वह स्वच्छता तथा अहिंसा का पुजारी है। आज के हिन्दू का भगवान सर्व शक्तिमान है, सर्वव्यापी है, सर्वज्ञानी है। चूंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान है वह कुछ भी कर सकता है। अतः ईश्वर पर हमारी आस्था एवं हमारी मान्यताओं (बिलीफ) का कोई बन्धन नहीं है। ईश्वर हमारी मान्यताओं (बिलीफ) से परे है। अतः सर्वशक्तिमान ईश्वर कुछ भी कर सकता है, वह अपने को भक्तों के लिए किसी भी रूप में प्रकट कर सकता है। वह स्वयं को सगुण रूप में प्रकट कर सकता है। तो वह स्वयं को निर्गुण भी रख सकता है। हम उसको किस रूप में देखते हैं या देख सकते हैं यह हमारी मान्यताओं (बिलीफ) की सीमा है। हमारी मान्यताओं की सीमा हो सकती है परंतु सर्वशक्तिमान ईश्वर की कोई सीमा नहीं हो सकती। ईश्वर सभी मान्यताओं की सीमा से परे है। ईश्वर एक से अनेक रूपों में तथा अनेक से एक रूप में विद्यमान है।

आज के हिन्दू के लिये सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापी भगवान तुलसी का रूप ले सकता है, पीपल का रूप ले सकता है, बरगद का रूप ले सकता है, वानर के रूप में हनुमान का रूप ले सकता है, पर्वत के रूप में शिव का रूप ले सकता है'', पत्थर के रूप में शिवलिंग का रूप ले सकता है, नदी के रूप में गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, कावेरी, गोदावरी का रूप ले सकता है स्त्री के रूप में लक्ष्मी, सरस्वती, काली, सीता और दुर्गा का रूप ले सकता है, पुरुष के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम राम और कर्म योगी, ज्ञान योगी के रूप में कृष्ण का रूप ले सकता है। आज के हिन्दू के लिये भगवान सभी जीवों में निवास करता है। वह सभी स्त्रियों में, सभी पुरुषों में, सभी बच्चों में वास करता है। वह सभी मनुष्यों में समान रूप से विद्यमान है। चाहे मनुष्य किसी भी जाति या पंथ में पैदा हुआ हो, सभी में एक ही ईश्वर का अंश विद्यमान है। चाहे मनुष्य नीची जाति का हो, पिछड़ा हो, निर्धन हो, अशिक्षित हो, काला हो या गोरा हो सभी में एक ही ईश्वर का अंश विद्यमान रहता है। जब सभी मनुष्यों में एक ही ईश्वर का अंश विद्यमान है तो एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से ऊंचा या नीचा कैसे हो सकता है? ईश्वर का अंश होने के कारण सभी मनुष्य ईश्वरीय (डिवाइन) है। अतः सभी मनुष्य एक समान हैं। एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से ऊंचा या नीचा देखना, समझना और व्यवहार करना ईश्वर के साथ दुर्व्यवहार करना है।

आज के हिन्दू के लिए सभी जातियाँ और पंथ एक समान है। कोई ऊंचा, नीचा, दलित और अपवित्र नहीं है। भारतीय संविधान में भी सभी जातियों तथा पंथों को हिन्दू धर्मावलम्बियों के द्वारा समान माना गया है और सभी को विकास के समान अवसर प्रदान करने की प्रतिबद्धता का संकल्प लिया गया है। वह यदि जाति–पाति या पंथ के नाम पर भेदभाव करता है तो वह ईश्वर का अपमान करता है। अतः आज के हिन्दू के लिये सभी मनुष्य बराबर हैं। अगर आज का हिन्दू सभी मनुष्यों को एक समान नहीं समझता है तथा एक समान व्यवहार नहीं करता है तो वह हिन्दू धर्म का पालन नहीं कर रहा है। वह अधर्म का पालन कर रहा है। धर्म जो कि अपने प्रति, समाज के प्रति एवं प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदारी है, उसके प्रति हिन्दू विमुख नहीं हो सकता है। धर्म के प्रति उसकी स्वेच्छा नहीं है। वह रिलिजन अर्थात् आस्था या मान्यताओं को मानने या न मानने के प्रति अपनी इच्छा का निर्वाह कर सकता है परंतु धर्म (कर्तव्य) के प्रति उसे प्रतिबद्ध होना चाहिए। अतः सभी मनुष्यों के साथ समानता का व्यवहार करना उसका परम धर्म (कर्तव्य) है।

आज के हिन्दू के लिये सतत विकास के लक्ष्य सतत जीवन के लक्ष्य हैं। उसका भगवान का स्वरूप सतत जीवन को बनाए रखने एवं मानव जाति के विकास के लिये है। पर्यावरण के लिये उसकी विशेष ज़िम्मेदारी धर्म है। भगवान में आस्था उनका धर्म (ज़िम्मेदारी–कर्तव्य) है। उसके लिये रिलिजन केवल एक आस्था नहीं है, उसके लिए रिलिजन एक धर्म (कर्तव्य) है। अतः पर्यावरण को बचाये रखना, उसे संरक्षित करना उसका धर्म (कर्तव्य) है। यह उसकी केवल मान्यता (रिलिजन) या आस्था नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने सितंबर 2015 में पूरे विश्व के लिये 17 संधारणीय विकास लक्ष्यों की घोषणा की थी। भारत के साथ अन्य 192 देशों ने 01 जनवरी 2016 से 2030 तक इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है। अतः भारत को इन लक्ष्यों को 2030 तक प्राप्त करना है। इन लक्ष्यों के प्रमुख बिन्दु निम्न प्रकार से है:–

1. पूरे विश्व से गरीबी उन्मूलन करना।
2. सभी के लिये भुखमरी का निवारण करना, खाद्य सुरक्षा एवं पोषण सुनिश्चित करना तथा संधारणीय (जैविक) कृषि को बढ़ावा देना।
3. सभी के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा एवं स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देना।

4. समावेशी एवं गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करना तथा सभी को सीखने के समान अवसर प्रदान करना।

5. लैंगिक समानता प्राप्त करना तथा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।

6. सभी के लिये स्वच्छता प्रदान करना तथा शुद्ध पानी की सतत उपलब्धता सुनिश्चित करना।

7. सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ एवं आधुनिक ऊर्जा तक सबकी पहुँच सुनिश्चित करना।

8. सभी के लिये समावेशी और सतत आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोजगार तथा बेहतर कार्यों को बढ़ावा देना ।

9. लचीले बुनियादी ढांचे, समावेशी और सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा देना।

10. असमानता को समाप्त करना।

11. सुरक्षित, लचीले और टिकाऊ शहर तथा मानव बस्तियों का निर्माण करना।

12. संधारणीय उपभोग एवं उत्पादन व्यवस्था को सुनिश्चित करना।

13. जलवायु परिवर्तन और उनके प्रभावों से निपटने के लिये तत्काल कार्यवाही करना।

14. सतत विकास के लिये महासागरों, समुद्रों और समुद्री संशाधनों का संरक्षण एवं उपयोग सुनिश्चित करना।

15. सतत उपयोग के लिये स्थलीय पारिस्थितिकीय प्रणाली का संरक्षण, जंगलों की सुरक्षा, भूमि क्षरण एवं जैव विविधिता के बढ़ते नुकसान को रोकना।

16. सभी के लिए न्याय उपलब्धता तथा सभी स्तरों पर प्रभावी, जवाबदेही और समावेशी संस्थाओं का निर्माण करवाना।

17. सतत विकास के लिये वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करना तथा कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना।

संधारणीय विकास के उपरोक्त लक्ष्यों को मुख्यतः निम्न तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है:–

1. सभी मनुष्यों भले ही वे गरीब हों, बीमार हों, भूखे हों, अशक्त हों, उनको सम्मानजनक जीवन प्रदान करने के सतत प्रयास करना।
2. सभी जीवों की रक्षा करना।
3. प्रकृति– पेड़–पौधों, धरती, पहाड़ नदी इत्यादि का संरक्षण करना।

आज का हिन्दू सभी मनुष्यों– गरीब–अमीर, स्त्री–पुरुष, शक्त–अशक्त, बच्चे–बूढ़े, ऊंच–नीच में भगवान का ही रूप देखता है। अतः आज का हिन्दू सभी गरीबों, दलितों, स्त्रियों, बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण एवं सम्मानजनक जीवन प्राप्त करने में योगदान देने को अपना धर्म अर्थात कर्तव्य या ज़िम्मेदारी समझता है। वह सभी जीवों एवं प्रकृति– पेड़–पौधों, धरती माँ, नदी–पर्वत इत्यादि में भगवान का अंश देखता है। वह सभी जीवों एवं पर्यावरण के सभी अंगों की रक्षा को अपना धर्म (कर्तव्य) मानता है तथा उसके लिये कृतसंकल्प है।

उपरोक्त से ये स्वतः सिद्ध है कि अगर आज का हिन्दू अपने धर्म का पूर्ण रुपेण निर्वाह करता है तो वह संधारणीय विकास के उपरोक्त सभी लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त करने में देश एवं समाज में अपना योगदान देता है तथा सतत संधारणीय जीवन को प्राप्त करने में सतत (सनातन) धर्म को सक्षम बनाता है। इस प्रकार पूरे विश्व में वह एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इति।

महात्मा गांधी की दांडी यात्रा एक दृष्टिकोण

सुश्री एस.एस. शाह
उपमहालेखाकार/प्रशासन

प्रभु श्री राम ने जब लंका कूच करने का निर्णय किया तब उनके इस कूच में अनेक पड़ाव आए जो आज प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों के रूप में जाने जाते हैं। ठीक इसी प्रकार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा उस समय की गोरी सरकार के काले कायदों को खत्म करने के लिए अपनी मंडली के साथ एक ऐतिहासिक यात्रा सन 1930 में की गई। इस यात्रा में भी अनेक पड़ाव आए जो वर्तमान में अपनी ऐतिहासिक धरोहर के रूप में जाने जाते हैं। गांधी जी की इस यात्रा को 'दांडी यात्रा' का नाम दिया गया और इस यात्रा में भाग लेने वाले सभी लोगों को सैनिक कहा गया। इन सैनिकों को दांडी यात्रा के दौरान गांधी जी द्वारा अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा न्यायशास्त्र का पाठ भी पढ़ाया गया। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य उस समय अंग्रेज़ सरकार द्वारा नमक उत्पादन और नमक के विक्रय पर लगाए गए अनाप-शनाप करों को समाप्त करना तथा देश वासियों को इस कानून से मुक्त करके अपने अधिकार दिलवाना था। उस समय गुजरात राज्य में 16 हजार किलोमीटर के समुद्र के किनारे नमक की खेती हुआ करती थी इतना ही नहीं कच्छ एवं सौराष्ट्र में नदी के किनारे पर भी नमक की खेती हुआ करती थी। यही कारण था कि महात्मा गांधी जी द्वारा गुजरात राज्य को दांडी यात्रा के लिए चुना गया।

अनवरत चलने वाली इस यात्रा ने उस समय की अंग्रेज़ सरकार की नींव को हिला कर रख दिया था। गांधी जी की इस यात्रा से न केवल अँग्रेजी हुकूमत को एक संदेश गया बल्कि देश और दुनिया को अहिंसा के मार्ग पर चलकर आंदोलन करने की प्रेरणा भी मिली। जब हम इस दांडी यात्रा पर एक दृष्टिकोण डालते हैं तो पाते हैं कि गांधी जी की इस दांडी यात्रा में न केवल जनता का हित छुपा था बल्कि इसके माध्यम से नैतिक शिक्षा भी देना था, उदाहरण के लिए दांडी यात्रा के दौरान सभी सैनिक केवल खादी के वस्त्र (धोती-कुर्ता) पहनते थे, उनके

यकायक बिना विचारें कोई काम नहीं करना चाहिए। - भारवि

खाने में रोटी, भाकरी व शाक तथा छाछ हुआ करती थी तथा सैनिक अपने पास एक डायरी भी रखते थे। प्रत्येक सोमवार को छुट्टी हुआ करती थी जिसमे वे कपड़े धोते, पत्र व्यवहार करते, तथा आराम किया करते थे। गांधी जी छुट्टी के दिन मौन रहा करते थे। गांधी जी का यह नमक सत्याग्रह सिर्फ स्वतन्त्रता आंदोलन के लिए ही नहीं था बल्कि यह गांधी जी के रचनात्मक कार्यों को दर्शाने के लिए एवं सामाजिक उत्थान हेतु एक प्रयोग था। आंदोलन में मंडली के सभी सैनिक नियमों का पालन करते थे। उन्हे खर्च के लिए केवल एक रुपया, खादी के वस्त्रों का उपयोग तथा विश्राम हेतु एक चादर दी जाती थी। वे एक दिन एक गाँव तो दूसरे दिन दूसरे गाँव की यात्रा किया करते थे। सभी सैनिक रात में खुले आसमान तथा दोपहर में पेड़ के नीचे रहा करते थे। यात्रा के दौरान गांधी जी को अहमदाबाद के चीनू भाई द्वारा एक सफ़ेद घोड़ा भी दिया गया था किन्तु गांधी जी ने इसे लेने से इंकार कर दिया था बाद में इस घोड़े को गांधीजी द्वारा गुजरात के खेड़ा जिले के नवागाम में चीनू भाई को वापस कर दिया गया था। गांधी जी के इस आंदोलन को ध्यान में रख कर भारतीय डाक विभाग द्वारा गांधी जी की जीवन सेवा को दर्शाते हुए चार डाक टिकट भी जारी किए गए थे जिनमे पहला डाक टिकट किसान कल्याण हेतु, दूसरा सामाजिक उत्थान, तीसरा सांप्रदायिक सद्भावना तथा चौथा नमक सत्याग्रह के चित्र को दर्शाते हुए जारी किया गया था। दांडी कूच के अंतिम दिनों में गांधी जी रोज़ सुबह उठकर लंगोट पहनकर समुद्र में स्नान किया करते थे और नहाने के बाद ''वैष्णव जन तेरे कोन्हे कहिए जो पीर पराई जाणे रे...'' भजन गाया करते थे। इस प्रकार एक दिन सुबह 6.30 बजे उठकर गांधी जी ने एक मुट्ठी नमक उठाया और नमक का कानून भंग किया। वहाँ उपस्थित सभी लोगों के द्वारा वंदे मातरम के नारे लगाए गए।

गांधी जी की यह दांडी यात्रा एक यात्रा न रहकर अपितु एक जन आंदोलन बन गया था। इस जन आंदोलन को देखते हुए अंग्रेज़ सरकार को कानून बनाना पड़ा था। इस प्रकार अपने अनेक पड़ाव पूरे करते हुए गांधी जी की यह दांडी यात्रा जनता के सामाजिक उत्थान के साथ साथ जनता में अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की अलख जगाने के साथ सम्पन्न हुई।

मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य मेरा भगवान है, अहिंसा उसे पाने का साधन।

– महात्मा गांधी

कुछ पंक्तियाँ...

श्री एम.वी. शर्मा
वैयक्तिक सहायक (सेवानिवृत्त)

मेरी आँखों के आईने में एक तस्वीर रहती है,
धुंधला न जाए उसका रंग इसलिए रोने से डरता हूँ।
आलम बेखुदी का भी इस कदर है कि,
अभी तुझे पाना बाकी है और तुझे खोने से डरता हूँ।

आँखें हसकर पूछ रहीं हैं
नींद आने से क्या होता है?
तुम मुझको अपना कहते हो
कह लेने से क्या होता है?

क़तल होना शाम को और सुबह जिंदा लौटना,
मैंने कभी सूरज का यारों यह हुनर समझा नहीं।
उसने एक पल भी मुझे तन्हा रहने नहीं दिया,
वो रहा मौजूद मुझमें मगर मैं समझा नहीं।

उसने देखते ही मुझे दुआओं से भर दिया
मैंने तो अभी सजदा भी नहीं किया था ।

गांधीजी की 150वीं जयंती

श्री डी.डी. गौड़
हिन्दी अधिकारी

''जो समय बचाते हैं वो धन बचाते हैं बचाया हुआ धन हमारे कमाए हुए धन के बराबर है''
- गांधीजी

2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की 150वीं जयंती है। महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 और मृत्यु 30 जनवरी 1948 को हुई थी। महात्मा गांधी के विचारों को दुनियाभर में काफी पसंद किया जाता है और काफी लोग इनके विचारों का पालन भी करते हैं। गांधी जी ऐसी शख्सियत थे जिनको दुनिया के हर हिस्से में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उनको महात्मा कहा ही इसलिए जाता है क्योंकि उन्होंने मानवता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाया। गांधीजी कहा करते थे कि विश्व में किसी समस्या का हल हिंसा नहीं हो सकती, इसके लिए अहिंसा ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। उनके कुछ विचार ऐसे हैं जिनको जीवन में आत्मसात करने से सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं।

गांधीजी की जन्म शताब्दी को तो उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने की भावना से मनाया गया था लेकिन इस बार उनके विचारों को औजार और हथियार के रूप में प्रयोग लागू करने के मिजाज से मनाने की योजना है, क्योंकि इस बार गांधीजनों को लगता है कि उनके सामने एकमात्र उनके लिए, देश के लिए और पूरी मानवता के लिए गांधीजी के विचारों को जन-जन तक नहीं पहुंचाएंगे तो मौजूदा हालात गांधीजी के आदर्शों से भटक जाएंगे । 'हो जन-जन के हृदय समान' की भावना से गांधीवादी संस्थाओं से जुड़ें प्रतिनिधियों, नेताओं, और कार्यकर्ताओं ने 'गांधी 150' के नाम से गांधीजी की 150वीं जयंती मनाने के लिए अपनी कोशिशें तेज कर दी हैं। गांधी शांति प्रतिष्ठान, गांधी स्मारक निधि, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और कस्तूरबा गांधी स्मृति ट्रस्ट की पहल पर लोकशक्ति को जगाने के मकसद से संस्थाओं और लोगों को जोड़कर गांधीजी के विचारों को उनकी ही रणनीति से जन-जन तक पहुंचाने

की कोशिश की जा रही है। गांधीजी के सत्य और अहिंसा के विचार न सिर्फ भारत बल्कि पूरी दुनिया के लिए व्यापक महत्व रखते हैं। जब धर्म, जाति, भाषा और राष्ट्रीयता इत्यादि के नाम पर घृणा का माहौल बन गया हो, ऐसे में इससे उबरने के लिए मानवता के सामने गांधी ही एकमात्र विकल्प हैं इसलिए हमारा प्रयास ऐसा होना चाहिए कि सामाजिक, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति और सौहार्द की स्थापना की जा सके।

आज हम पर्यावरण के विघटन का भी सामना कर रहे हैं और असंतुलित विकास के कारण धन के समान वितरण की भी समस्या से जूझ रहे हैं। सभा में एक मन से इस पर चिंता जताई गई कि मानवता के नैतिक और मानवीय मूल्यों में गिरावट आती जा रही है और इसी के साथ मौजूदा समय में भारत और पूरे विश्व में व्याप्त राजनीतिक और नैतिक गिरावट के संदर्भ में यह तय किया कि हम गांधी के शांति व सौहार्द के तरीकों और सिद्धांतों पर फिर से नजर डालें। हमें चाहिए कि अपने दशकों के पुराने अनुभवों के आधार पर गांधीजी को हम फिर खोजें और प्रेम व अहिंसा की गतिशीलता को समझकर युवा पीढ़ी के सामने गांधीजी को ले जाएं। गांधीजी आज एक ऐतिहासिक आवश्यकता बन गए हैं और ऐसे में इस 150वीं जयंती के अवसर पर उन्हें उनके समग्र रूप में लाने की ऐतिहासिक भूमिका हम पर आई है। गांधीजी की 150वीं जयंती के कार्यक्रमों को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए उनके मुद्दों और समस्याओं का समाधान गांधीवादी समझ के आलोक में खोजा जाना चाहिए।

गांधी जी के अनमोल विचार:–

- विश्वास करना वास्तव में एक गुण है। अविश्वास तो दुर्बलता की जननी है।
- अपने प्रयोजन में विश्वास रखने वाला एक सूक्ष्म शरीर इतिहास के रुख को बदल सकता है।
- मौन की ताकत समझिए। मौन ही सबसे सशक्त भाषण है। धीरे–धीरे दुनिया आपको सुनेगी।
- डर क्या है ? ये तो शरीर की बीमारी नहीं है। यह हमारी आत्मा को मारता है।
- अगर आंख के बदले आंख की सोच को बदला ना गया तो यह एक दिन समूचे विश्व को ही अंधा बना देगी।
- प्रसन्नता ही एक मात्र ऐसा इत्र है, जिसे अगर आप दूसरों पर छिड़केंगे तो कुछ बूंदें आप पर भी गिरेंगी।
- हमेशा याद रखिए। किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं होती। उसके चरित्र से होती है।

गूंज नहीं आवाज बनो

श्री अभिमन्यु सिंह कुंतल
स.ले.प.अ.

गूँज नहीं आवाज बनो
किसी का गुजरा कल नहीं
तुम बस खुद का आज बनो
गूँज नहीं आवाज बनो।

कोई कहे वैसे बनो
ऐसे नहीं उसके जैसे बनो
पर तुम बस खुद की आवाज सुनो
गूँज नहीं आवाज बनो।

है मुमकिन होंगे दोराहे पर कभी तुम
एक जाएगी जहां होंगे सबके घर
तुम बस इसलिये उस पर जा
ना अपनी मंजिल से इंकार करो
चुन अपनी राह स्वयं ही उसका एतबार करो
गूँज नहीं आवाज बनो।

कई मर्तबा होंगे तुम बिलकुल अकेले
दूर–दूर तक साथ देने वालों के ना होंगे मेले
क्यों किसी के साथ का तुम इंतजार करो
रण मुकुट हो तुम बढ़ अकेले ही उसका श्रृंगार करो
गूंज नहीं आवाज बनो।

जब होंगे बिलकुल करीब तुम अपनी मंजिल के
ना बन जाना तुम बाधा अपनी कोशिश के
कि बहकाएंगे तुम्हें गूंज के गुंजायमान से
डराएंगे सब उनके टूटते अभिमान से
पर तुम भर साहस अपनी पगधारा में
चुनना अपनी आवाज और कहना नहीं हारा मै
गूँज नहीं आवाज बनो।
किसी का गुजरा कल नहीं
तुम बस खुद का आज बनो ।।

हिन्दी की घटती साख

श्री अनुराग श्रीवास्तव
स.ले.प.अ.

वर्तमान समय में अंधाधुंध प्रतिस्पर्धा और अत्यधिक आधुनिकता के बीच हमने अपनी जिन मौलिकताओं को खो दिया है उनमें हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति लगाव और इसका प्रयोग सर्वोपरि है। आज स्थिति यह है कि कोई भी अभिभावक अपने बच्चों का दाखिला हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में नहीं कराना चाहता। इसे दुर्भाग्य कहना ही उचित होगा कि आज हमारे समाज में अंग्रेजी बोलना किसी व्यक्ति की बुद्धिमत्ता का परिचायक समझा जाता है। हिन्दी के प्रति यह उदासीनता चिंताजनक है।

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में एक मत से निर्णय लिया गया था कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी और इसी ऐतिहासिक तिथि को हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है। किन्तु, विडम्बना यह है कि आज देश की यही राजभाषा अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है। हिन्दी दिवस पर विभिन्न कार्यालयों, विद्यालयों इत्यादि में कोई न कोई आयोजन अवश्य किया जाता है किन्तु इन आयोजनों में सक्रिय सहभागिता नगण्य होती है और औपचारिकता मात्र की पूर्ति की जाती है। सरकारी दफ्तरों में हिन्दी में कार्य करने संबंधी परिपत्र व कार्यालय आदेश जारी किए जाते हैं पर यह भी एक औपचारिकता ही है।

आज की स्थिति को देखकर यह आंकलन करना कठिन नहीं है कि, आने वाली पीढ़ियाँ जिन्हें हम अपना भविष्य तथा अपनी संस्कृति का वाहक कहते हैं, हिन्दी के प्रयोग को सिरे से नकार देंगी और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी प्राथमिकता अंग्रेजी भाषा बन जाएगी। हिन्दी भाषा के प्रयोग की समाप्ति के साथ ही हिन्दी साहित्य का यशस्वी इतिहास भी पुराने, जीर्ण-शीर्ण पुस्तकालयों की धूल-धूसरित पुस्तकों के बीच दीमकों का भोजन बन कर रह जाएगा।

तब शायद ही किसी को ज्ञान होगा कि तुलसीदास, सूरदास, कबीर, निराला और दिनकर कौन थे और हमारे हिन्दी साहित्य का इतिहास कितना महान और समृद्ध है।

निश्चित तौर पर आज के परिवेश के हिसाब से अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक है किन्तु हिन्दी के प्रति उदासीनता अत्यंत दु:खद है। हिन्दी हमारी भारतीयता और हमारी संस्कृति को प्रकट करने का सबसे सशक्त माध्यम है। इसका प्रत्येक स्तर पर अधिक से अधिक प्रयोग होना चाहिए और इसे उचित सम्मान मिलना चाहिए।

हिन्दी की लगातार घटती साख को बचाने के लिए हमें नई पीढ़ी को तुलसीदास की 'रामचरितमानस', निराला की 'राम की शक्ति पूजा' और दिनकर की 'रश्मिरथी' जैसी कालजयी रचनाओं को पढ़ने और उनसे सीखने के लिए प्रेरित करना होगा। उनके मन में हिन्दी के प्रति सम्मान के भाव का संचार करना होगा तथा उनके ह्रदय में सहज ही इस भावना को जन्म देना होगा कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है, हमारी पहचान है, हमारी मौलिकता है, हमारा अभिमान है।

आईना

श्री नितिन सिंह पुंडीर
वरिष्ठ अनुवादक

समाज की अहंकारी सोच चारो तरफ मन पर दुष्प्रभावी है,
पता नही चलता कि नर नारी पर या नारी नर पर हावी है,
मै की लडाई में स्वार्थवश गृहस्थी निरंतर बिगड़ती जाती है,
मरणासन्न होते ही पति-पत्नी को एक-दूसरे की याद सताती है।

बेटियाँ घर-घर में सबकी दुलारी होती हैं,
माँ-बाप को जीवनभर जान से प्यारी होती हैं,
न जाने क्यों लोग फिर भी बेटों को तरसा करते हैं,
अहंकार के झूठे दंभ में सम्मान का आडम्बर भरते हैं।

न जाने कब तक ये बेटियाँ माँ की कोख में मारी जाएंगी,
दमित इच्छाएँ समाज को पतन के गर्त में लेकर आएंगी,
वास्तविकता से मुहँ मोड़ने वालों को तब अक्ल आएगी,
चिराग लेकर दर-दर घूमेंगे लेकिन बहू नहीं मिल पाएगी।

समाज की दकियानूसी बेड़ियाँ खीचते हुए कहां तक जाओगे,
स्वार्थवश आतुरता में अपना ही अंश मिटा पाप कर जाओगे,
अब नहीं सुधरे तो भविष्य में एक दिन ऐसा अवश्य आएगा,
जब तुम पछताओगे लेकिन भगवान भी माफ नहीं कर पाएगा।

‘बाप का खत एक अजन्मी बेटी के नाम’

श्री राकेश मीना
लेखापरीक्षक

प्रिय लाडो,

पता है आज पूरा परिवार कितना खुश है, तेरी माँ तेरे नन्हें कोमल हाथों को सहलाते हुए अपनी बेटी के साथ अपने मातृत्व पर गर्वित हो रही है और मैं तो नन्ही परी के ज़िंदगी में आने से एक जाना–पहचाना सा हर्ष महसूस कर रहा हूँ। लाडो, तेरी दादी तो सुबह–सुबह जल्दी ही नहा धोकर भगवान से तेरी खुशी की मन्नते मांग रही है और घर के बाकी लोग भी नए महमान की खुशी में अत्यंत हर्षित है।

बेटी लाडो, इतनी खुशी के बावजूद भी मैं एक अनजाने से भय की काली परछाई से डरा–सहमा हुआ हूँ क्योंकि बेटी तेरी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी मुझ पर है। पता है बेटी पहले तेरा बाप जहाँ खुद की भी परवाह नहीं करता था वही आज कमरे में भिनभिनाते एक मच्छर से भी डर जाता है कि कही ये मेरी फूल सी बेटी के मासूम जिस्म से खून न चूस लें। डरता हूँ कि मेरी बकरी चराती बेटी को राह चलते दरिंदे कहीं हवस का शिकार ना बना लें, डर लगता है कि कहीं मेरी बेटी इन सामाजिक भेड़ियों से खुद को पीड़ित पाकर खुद के ‘जन्म’ को ही ना कोसने लगें। क्या करूँ बेटी एक बाप हूँ ना तो डर तो लगता ही है लेकिन तू चिन्ता ना कर तेरे पापा तेरे साथ है। तेरी खातिर मैं समाज, कुरीतियों, पश्चगामी प्रथाओं और ओछी मानसिकता वाले लोगों से भी दो–चार हो लूँगा लेकिन बेटी तेरी लड़ाई खुद तुझे ही लड़नी होगी। क्योंकि पता है बेटी जब भी तू तेरे भाई की तरह जींस का पैंट–शर्ट पहन कर घर के बाहर निकलेगी तो लोग टकटकी लगाकर तुम्हें गंदी नजरों से देखेंगे और फब्तियाँ भी कसेंगे लेकिन बेटा इन सब

से तुम सकपकाना मत, क्योंकि तुम्हारी टूटन ही उनकी मजबूती बनेंगी तथा वो और दु:साहसी होंगे।

मेरी लाडो, मैं पूरी कोशिश करूंगा की मैं तुझमें और तेरे भाई में कोई अंतर ना समझूँ और हर वो चीज तुमको भी उपलब्ध करवाऊँगा जो तुम्हारे भाई को उपलब्ध करवाई जाएगी। मैं तुम्हें अपना बेटा मानकर ही तुम्हारा लालन-पालन, तुम्हारी शिक्षा दूँगा और तुम्हारी शादी भी तुम्हारी पसंद के लड़के से ही करवाऊँगा वो भी इस बात की चिन्ता (इल्म) किए बिना कि उसका जाति, धर्म, संप्रदाय क्या है।

लेकिन लाडो अपनी जीवन की सीढ़ियाँ तो स्वयं तुम्हें ही चढ़नी होगी और अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते हुए तुम्हें पी.टी. उषा और लक्ष्मीबाई होने का अहसास इन लोगों को दिलाना होगा तुम्हें सशक्त बनना होगा ताकि कोई गर्दिश का चला कीड़ा तुम्हें 'निर्भया' 'दामिनी' या 'आसिफा' ना बना पाये। अपने शोषण का प्रतिकार करना होगा।

और अन्त में मेरी लाडो मैं यही कहूँगा की तेरी डगर इतनी आसान नहीं है तुम्हें 'अरुणिमा सिन्हा' होने का अहसास लोगो को दिलाना होगा।

'तेरी स्नेहिल भावनाओं के साथ तेरा पिता'

उसूल-ए-जिंदगी

श्री प्रदीप सिंह
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

बड़ा कठिन है तूफानों में खुद को संभाले रखना
हवाओं के विपरीत भागना पड़ता है,
यूं ही नहीं मिल जाया करते मुकाम-ए-शोहरत
सब को सुला के रातों में जागना पड़ता है।

मिलती है निराशा तो गम नही
सफलता के लिए ठोकर खाना पड़ता है,
इतनी भी आसां नही होती फितरत-ए-मंजिल
पत्थरों को काटकर रास्ता बनाना पड़ता है।

ख़्वाहिशों का उमड़ता कारवां है मन में
पर जिम्मेदारियों के आगे सर झुकाना पड़ता है
गर चाहत हो खुशियाँ पाने की
तो तकलीफ़ों के बोझ उठाना पड़ता है।

जीते रहें कठिनाइयों के दौर में
फिर भी खुश होकर दिखाना पड़ता है
लाख हो दुखों के साए
पर भीड़ में मुस्कुराना पड़ता है।

कारीगर

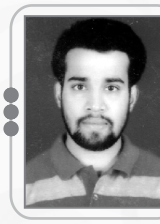

श्री अभिमन्यु सिंह कुंतल
स.ले.प.अ.

अभी कम से कम 10 दिन और लगेंगे प्रथम बाबू 10 दिन! (चौंकते हुए) लेकिन हमने तो कहा था 6 दिन बाद राखी पर काम पूरा चाहिये। बाबू जी कहा तो था पर प्रांजलि दीदी ने अंतिम वक्त में कुछ बदलाव भी करा दिये थे मंदिर में, बस उसी वजह से काम थोड़ा बढ़ गया है पर आप चिंता न करें मैं पूरी कोशिश करूंगा।

प्रांजलि बड़बड़ाते हुए बोली काको आप से कितनी बार कहा है हमे दीदी न बुलाया करो और ऐसा कहते–कहते वो बाहर चली गई। प्रथम बाबू प्रांजलि मैम साहब इतनी नाराज क्यों हो जाती हैं? कुछ नहीं काको, तुम्हारी मेम साहब के इकलौते भाई का बचपन में ही देहांत हो गया था बस इसलिये।

खैर छोड़ो तुम उसे, उसे मैं संभालता हूँ तुम बस अपना काम समय पर पूरा करो। मुहूर्त भी तो है ना, ठीक है बाबूजी आप निश्चिंत रहिए। प्रथम बाहर आ अपनी पत्नी प्रांजलि को समझाने लगता है कि काको ना–समझ है बस कारीगर ही तो है उसे क्या खबर क्या कहना है और क्या नहीं? चलो गुस्सा छोड़ो ....

और फिर दोनों कार में बैठकर अपने पुराने घर चले जाते हैं। अगले दिन शाम को प्रांजलि का फोन बजा वहाँ से कोई बोला काको को काम करते हुए करंट लग गया है उसके दोनों हाथ झुलस गए हैं। ये सुन प्रांजलि भागी–भागी अस्पताल पहुंची रास्ते में उसने प्रथम को भी फोन कर दिया वहाँ पहुँच दोनों ने अस्पताल की कार्यवाही पूरी की और जा पहुंचे काको के पास। लेकिन काको अभी बेहोश था। कुछ और लोग भी थे वहाँ, वो सब भी आस–पास कारीगरी का काम करते थे।

एक पिता सौ स्कूल मास्टर्स के बराबर होता है । – जार्ज हर्बर्ट

उनमें से एक बोला साहब वो कह रहा था उसे जल्द से जल्द मंदिर का काम पूरा करना है ताकि उसके मालिक उसमे रह सके। वह बता रहा था कि मैम साहब का कोई भाई नहीं है और उसकी भी बहन नहीं है तो वह राखी पर मैम साहब से राखी बंधवाएगा। बस इसी जल्दबाज़ी में उसे करंट लग गया और उसके साथ हादसा हो गया। जैसे ही प्रांजलि ने ये सुना उसके पैरो तले जमीन खिसक गई वह सोचने लगी कैसे बिना कुछ जाने उसने काको से उल्टा सीधा कह दिया। इन्हीं बातों को सोचकर वह रोने लगी। प्रथम उसे समझाते हुए घर ले गया। अगले दिन से प्रथम रोजाना प्रांजलि को अस्पताल छोड़ता और शाम को वापस ले जाता। वहाँ प्रांजलि काको की देखभाल करती पर काको अभी बेहोश था। कभी–कभी बेहोशी में वह बड़बड़ाता था मैम साहब मैं आपसे राखी बंधवाऊंगा। ये सब सुन प्रांजलि को बहुत अधिक अपराध बोध महसूस होने लगा पर अभी उसके बस में कुछ नही था।

और फिर उसकी मेहनत रंग लाई राखी से एक दिन पहले काको को होश आ गया। होश आते ही काको बोला मैम साहब मुझे माफ कर दो मैं मंदिर का काम पूरा नहीं कर सका। प्रांजलि काको की तरफ मुस्कराते हुए देखकर बोली आज से मैं तुम्हारी मैम साहब नहीं, मैं हूँ प्रांजलि दीदी। काको की आँखों में आँसू आ गए। वे दोनों काको को घर ले गए वहाँ अगले दिन प्रांजलि ने काको को राखी बांधी और इस तरह से काको कारीगर से काको कारीगर भैया बन गया।

सिसकते ज़ख्म

श्री सूर्यकांत चौधरी
स.ले.प.अ.

जहन में एक ख्याल था,
शायद कुछ हरा कुछ लाल था ।
इन ख्यालों के बनकर मोती,
गले से लग जाए कोई ।।

तबस्सुम की बारिश हुए एक अरसा हुआ,
जारों पे तिशनगी साफ नजर आती है ।
सूख जाए न ये दरख्त कहीं,
इसपे ओस की बूंदें ही गिराए कोई ।।

सनद है मेरे पास हर लम्हे की,
उसके मकां में रहता था ये मकी ।
दामन छुड़ा लिया कि जानते नहीं,
हमारी क्या हालत, उनको बताए कोई ।।

सोज़ से जल रहे है चश्म,
गा रहे हैं रो रो के ये नज़्म ।
कहीं से आ जाए कोई फिर,
जल्दी उनके दीदार कराये कोई ।।

मोहूम हो गया हूँ मैं,
तुम अपने घर, 'सूर्य' अपने घर ।
पर अब याद रहे लोगों,
दिल किसी से न लगाए कोई ।।

शब्दार्थ:-

जहन – मन	तबस्सुम – मुस्कुराहट	तिष्नगी – प्यास	दरख्त – पेड़
सनद – प्रमाण	मोहूम – धूमिल	जार – होंठ	सोज़ – दुख
चश्म – आँखें	मकीं – रहने वाला	मकां – रहने की जगह, हृदय	

घटनाओं की तह में जाने में ही बेहतर भविष्य है ।

ग्रामीण जीवन : मानवता एवं सुंदरता का समन्वय

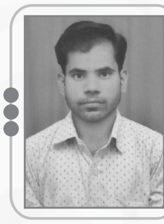

श्री प्रदीप सिंह
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कहा जाता है कि भारत गांवों का देश है और सही भी है क्योंकि भारत की अधिकतर जनसंख्या गांवों में ही निवास करती है। देश की अर्थव्यवस्था के लिए गाँव में रहने वाले किसान का बड़ा योगदान है ऐसा कह लीजिए कि गाँव का किसान भारत की विकास रूपी गाड़ी का प्रमुख पहिया है। हम अपने लेख में उसी ग्रामीण जीवन में निवास करने वाले किसान की जीवन शैली का उल्लेख एवं गाँव की सद्भावना से ओतप्रोत जीवन प्रणाली का विवरण देने का प्रयास कर रहे हैं।

सादगी पूर्ण जीवन एवं शांत वातावरण यही भारत के गावों की विचारधारा एवं पहचान है। जब भी मन में भारतीय गाँव का विचार आता है, तो खेतों में दूर-दूर तक लहराती हुई हरी-हरी फसलें, कड़ी धूप और खुले आसमान के नीचे काम करता किसान, घरों की भागदौड़ संभालती घर की महिलाओं की छवि आंखो के सामने आ जाती है। ऐसे मनोरम दृश्य की कल्पना में कुछ ऐसी ही पंक्तियाँ जहन में अवतरित होती हैं-

''धरती गगन हवा ये सब प्रकृति के फूल हैं
इनके अहसास ही गुलों की खुशबू और गुलशन के उसूल हैं।''

पेड़ों की ताजी हवा, शुद्ध दूध, रसायनों से मुक्त ताजी-ताजी सब्जियाँ, गांवों के चौपालों की रौनक आदि चीजें आज भी भारतवासियों को गाँव की ओर खीच ले जाती हैं। सभी ग्राम वासियों का एक दूसरे के लिए लगाव, उनका एक दूसरे के लिए सदैव तत्पर रहना ग्रामीण जीवन की प्रमुख विशेषता है। जहां शहरों में संयुक्त परिवार बमुश्किल ही दिखाई पड़ते हैं, वहीं

गावों में इसका महत्व आज भी कायम है। भारत त्योहारों का देश कहा जाता है इसका सबसे बड़ा प्रमाण गावों में ही देखने को मिलता है, जहां आज भी हर त्योहार जी भर के मनाया जाता है। उनके त्योहारों के मनाने की प्रक्रिया में यदि शामिल होने का मौका मिलता है तो यह अहसास स्वतः ही उजागर हो जाता है कि जीवन जीने की कला और सामाजिकता का प्रतिबिंब अभी भी व्याप्त है। सभी दुखों को धता–बता चेहरे पे जीवांत मुस्कान लिए अपने अभिनय की उत्कृष्ट प्रस्तुति देना, यही हर ग्रामीण की सर्वोच्च कला है और ये अनुपम कला दुनिया के किसी भी बाज़ार में खरीदी या बेची नहीं जाती है बल्कि उत्तम वातावरण व सदाचार के सानिध्य में स्वतः ही प्राप्त हो जाती है, पर इन सब अमूल्य गुणों की अहमियत शायद आज के इस आधुनिक युग में नाम मात्र की ही रह गयी है। आधुनिकता रूपी मायावी चोले को ओढ़कर चलने का यह कदाचित अर्थ नहीं है कि हम अपनी परंपरा या नैतिकता को ही भुला बैठे। अँग्रेजी साहित्य के महान कवि विलियम वर्ड्सवर्थ ने भी शहर की कोलाहल भरी जीवन शैली के बजाय ग्रामीण क्षेत्र की अभूतपूर्व सुंदरता का बखान किया है। सनातन काल से ही प्रकृति की सुंदरता का गावों के वातावरण से एक अनोखा संबंध रहा है। ऐसे में यह कहना कदाचित ही उचित नहीं होगा कि ग्रामीण जीवन का आधुनिक जीवन में कोई भी मूल्य नहीं है।

समाज की मानसिकता इतनी बदल चुकी है कि आज केवल शिक्षित होना ही सभ्यता का प्रमाण बन गया है। गाँव में निवास करने वाले ग्रामीण को लोग समझदारी के तर्क पर संदेह की नजरों से ही देखते हैं, पर बात यहीं समाप्त नहीं होती है। प्रश्न यह उठता है कि क्या किसी व्यक्ति का शिक्षित होना या आधुनिक होना ही सभ्य व्यक्ति की पहचान है? क्या उत्तम व्यक्ति की बस यही आधारभूत आवश्यकताएँ रह गई हैं? आज के युग में शायद संभव हो भी सकता है परंतु यह प्रामाणिक सत्य नहीं है। समझदार या सभ्य होने से यह तात्पर्य नहीं है कि आप के अंदर सहयोग या सद्भावना का विकास ही समाप्त हो जाए। आज भी गाँव में रहने वाला हर व्यक्ति दूसरों के दुख दर्द को अपना दुख दर्द समझकर एक दूसरे के साथ खड़ा मिलेगा। गाँव की हर समस्या किसी एक की व्यक्तिगत नहीं होती वहाँ आज भी समाज का वह स्वरूप रहता है जिसमें स्वार्थ नाम के शब्द को किंचित मात्र ही स्थान मिलता है। आज भी लोग एक दूसरे से

अनुकरण करके कोई व्यक्ति महान नहीं बन पाया। – सैमुअल जॉन्सन

मिलने के लिए तथा अपनी खुशियों को बांटने के लिए हर महीने त्योहारों का आयोजन करते हैं। उनके त्योहारों में औपचारिकता नहीं होती, त्योहारों को मनाने की प्रक्रिया के संदर्भ में उनका अपनापन देखने से ही बनता है।

आधुनिक होना या पाश्चात्य प्रभावी होना, ये शायद उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना आप में संस्कारों का होना है। इन गुणों के साथ जीवन का निर्वाह करने वाला व्यक्ति कभी भी असभ्य नहीं हो सकता चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित, ग्रामीण हो या नगरीय। एक व्यक्ति अगर बिना किसी स्वार्थ या भेदभाव के दूसरे व्यक्ति कि मदद के लिए तत्पर होता है, तो उसे उत्तम मानव होने के लिए किसी भी प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं है। कोलाहल से दूर बसे गांवों के जीवन एवं गहरी मानवता को चरितार्थ करती हुई कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत करता हूँ।

गर शहरों की बात करें तो,
न समय न साथी सिर्फ पैसों का जुनून मिलता है।
एक बार गाँव में भी कदम रखिए जनाब,
हर घर में अपनापन, हर बिस्तर पे सुकून मिलता है ।

आज और कल

श्री धर्मेंद्र पँवार
लेखापरीक्षक

उठ जाता हूँ भोर से पहले सपनें सुहाने नहीं आते
अब मुझे स्कूल न जाने के बहाने नहीं आते।
कभी पा लेते थे घर से निकलते ही मंजिल को,
अब मीलों सफ़र करके भी ठिकाने नहीं आते।
मुँह चिढाती हैं खाली जेब महीने के आखिर में,
अब बचपन की तरह गुल्लक में पैसे बचाने नहीं आते।
यूँ तो रखते हैं बहुत से लोग पलकों पर मुझे,
मगर बेमतलब बचपन की तरह गोदी उठाने नहीं आते।
माना कि जिम्मेदारियों की बेड़ियों में ज़कड़ा हूँ,
क्यूँ बचपन की तरह छुड़ाने वो दोस्त पुराने नहीं आतें।
बहला रहा हूँ बस दिल को बच्चों की तरह,
मैं जानता हूँ फिर वापस बीतें हुए ज़मानें नहीं आते।

जीवन का बोध

श्री उज्जवल रस्तोगी
स.ले.प.अ

प्राचीन समय में संभलपुर नामक नगरी थी। वहाँ एक राजा राज नारायण राज करते थे। उनका एक पुत्र था जिसका नाम रणवीर था। रणवीर अपनी किशोरावस्था पूर्ण कर युवावस्था में पहुंचा ही था। किन्तु अपने पिता के विपरीत वह बहुत ही घमंडी एवं गैर जिम्मेदार स्वभाव का था। जिस कारण राजा बहुत ही चिंतित रहते थे।

एक दिन राजा को एक तरकीब सूझी। राजा ने सेनापति को आदेश दिया कि वह राजकुमार को नगर भ्रमण के लिए ले जाए। आज्ञानुसार सेनापति व राजकुमार नगर भ्रमण के लिए निकलते हैं। सबसे पहले राजकुमार की नजर एक बुजुर्ग शिक्षक पर पड़ी। वह अपने पोते-पोती को गीता के उपदेश सुना रहा था। इस पर राजकुमार कटाक्ष करता है कि यह वृद्ध अपने जीवन में कुछ कर ना सका और अब गीता के उपदेश देता फिर रहा है। आगे चलकर वह एक निशांची को धनुष बाण चलाते हुए देखता हैं, किन्तु उसका निशाना पहली बार में चूक जाता है। इस पर भी राजकुमार कहता है कि धनुष बाण पकड़कर कोई भी निशांची नहीं बन जाता। फिर आगे चलकर राजकुमार की नजर धुएँ के धुंध पर पड़ती हैं। जब राजकुमार करीब जाकर देखता है, तो वहाँ पर एक लौहार धौंकनी से आग को फूँक रहा होता है। इस बार राजकुमार खीजता हुआ कहता है कि लौहार पागल हो गया है, जो पानी से आग बुझाने की जगह, हवा फूंककर आग बुझा रहा है। अंततः सेनापति एवं राजकुमार वापस महल आते है।

राजा सेनापति से एकांत में सारा वृतांत सुनते है। तत्पश्चात राजकुमार के समक्ष यह प्रस्ताव रखते हैं कि अब राजकुमार को राजभार सौंप दिया जाये। इस पर राजकुमार बहुत हर्षित होता है। किन्तु राजा राजकुमार के सम्मुख एक परीक्षा भी रखते है। परीक्षानुसार राजकुमार को एक दिवस के लिए एक मूल्यवान मणि की देख-रेख करने का कार्य सौंपा।

राजकुमार वह मणि अपने कक्ष में रख देता है और कुछ देर निगरानी करने के बाद वह रात्रि के समय बेफिक्र होकर सो जाता है।

प्रातः काल राजा राजकुमार को आदेश देता है कि वह मणि राजा को लौटा दी जाए। राजकुमार आदेशानुसार मणि लेने अपने कक्ष में जाता है किन्तु मणि अपने स्थान पर ना पाकर व्याकुल हो उठता है। बहुत ढूँढने पर भी वह मणि नहीं मिलती है। तब राजकुमार हताश होकर राजा को कहता है कि मणि लुप्त हो गई है और शर्मिंदा होकर सिर झुका लेता है। राजा क्रोधित होकर उससे कहता है कि अगर तुमसे एक दिन के लिए एक मणि की सुरक्षा नहीं हो सकती तो तुम राजभार संभालने के योग्य भी नहीं हो। इस प्रकार कटु वचन सुनकर राजकुमार रोने लगता है और अपनी गैरजिम्मेदारी पर पछतावा कर राजा से क्षमा याचना करता है। जब राजा यह देखता है कि राजकुमार को अपनी भूल का पछतावा हो गया है तब वह राजकुमार से कहता है कि जो वृद्ध गीता के उपदेश दे रहा था वह अपनी पीढ़ियों का मार्गदर्शन कर रहा था और अपने आने वाले जीवन को सुखद बना रहा था। इसके बाद जो निशांची अपने निशाने से चूक गया था वह भी अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर था कोई भी एक प्रयास में अच्छा निशानेबाज नहीं बन सकता, उसके लिए अभ्यास की अवश्यकता होती है। तत्पश्चात जो लौहार अपनी धौंकनी से फूँक मार रहा था, वह वस्तुत: आग की आँच को तेज कर रहा था न कि उसे बुझा रहा था।

ऐसा सुनकर राजकुमार और भी लज्जित हो जाता हैं, किन्तु राजा मुस्कुराकर कहता है कि जीवन की एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि गलतियाँ दूसरों की निकालना तो बहुत सरल है किन्तु खुद की गलती समझना बहुत कठिन है।

राजकुमार को राजा की बात की गंभीरता का अहसास होता है। तब राजा राजकुमार को लेकर उसके कक्ष में ले जाता है और मणि को वापस उसी स्थान पर पाकर आश्चर्य चकित हो जाता है। किन्तु पिता के मुख पर मुस्कान देखकर उसे यह समझते समय नहीं लगा कि मणि का पहरेदार बनाकर राजा उसे '**जीवन का बोध**' करा रहा था।

गुरु बिन ज्ञान नहीं

श्री हितेश कुमार
डी.ई.ओ.

खुद लौ की भांति, जलकर
रोशनी, जग को दिखाता है।
ज्ञान बांटता, बात–बात पर
अध्यापक, कहलाता है।।

कच्ची मिट्टी की, भांति जब
बच्चा स्कूल में, आता है।
उस भोले से बच्चे का, वह
संरक्षक, बन जाता है।।

पढ़ना कैसे, लिखना कैसे
हाथ पकड़, दिखलाता है।
बच्चो को वह, खेल खिलाकर
खुद बच्चा, बन जाता है।।

हिन्दी, इंग्लिश, मैथ पढ़ा कर
इतिहास, वही सिखलाता है।
घर में पहले, तैयारी कर
फिर स्कूल में, आता है।।

गुरु बिन ज्ञान, नहीं आता है
हमें समझ, नहीं आता है
देता वह, खुद का उदाहरण
गलत नहीं, सिखलाता है।।

हाँ, शिक्षक वही कहलाता है।

पृथ्वी ओवरशूट दिवस
(Earth Overshoot Day - EOD)

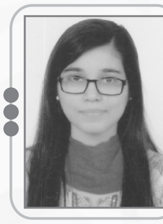

सुश्री मोनिका शर्मा
स.ले.प.अ.

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि दिनोंदिन बढ़ते प्रौद्योगिकी के उपयोग एवं विकास की होड़ में शामिल मानवता ने प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल की अपनी रफ्तार को पहले से भी अधिक तीव्र कर दिया है। मनुष्य द्वारा वर्ष भर में इस्तेमाल किये जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों की माप (पर्यावरणीय दृष्टिकोण से) करने हेतु अर्थशास्त्री एंड्रू सिमम्स द्वारा पृथ्वी ओवरशूट का विचार प्रकट किया गया था।

पृथ्वी ओवरशूट दिवस क्या है?

प्रत्येक वर्ष जब संसार प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल के संदर्भ में पर्यावरणीय दृष्टि से ऋणात्मक स्थिति में आ जाता है, तब 'पृथ्वी ओवरशूट दिवस' मनाया जाता है। इसका संदर्भ इस बात से है कि पर्यावरणीय दृष्टि से एवं प्राकृतिक संसाधनों की पहुँच की दृष्टि से जितनी मात्रा में मानव को इनका इस्तेमाल करना चाहिये, वस्तुतः मनुष्य उस सीमा को प्राप्त कर चुका है। इसके बाद हम जितनी मात्रा में इन संसाधनों का उपभोग करेंगे, उतना हमारे भविष्य के लिये निर्धारित वार्षिक कोटे से अतिरिक्त का उपभोग होगा। ध्यातव्य है कि वर्ष 2018 पृथ्वी ओवरशूट दिवस 2 अगस्त को मनाया गया।

पर्यावरणीय दुर्दशा

उल्लेखनीय है कि यह अभी तक की अपनी तरह की पहली ऐसी गणना है। ई.ओ.डी. की गणना को वर्ष 1987 से आरंभ किया गया है। यह गणना वस्तुतः हमारी पर्यावरणीय गिरावट (environmental degradation) की दर को प्रदर्शित करती है। ग्लोबल फुटप्रिंट

सच्चा बलवान वह है जिसने अपने मन को जीत लिया। - विनोबा भावे

नेटवर्क (जो कि प्रतिवर्ष ई.ओ.डी. की गणना करता है) के अनुसार, दुनिया के समस्त पारिस्थितिक पदचिह्न (world's ecological footprint) का लगभग 60 प्रतिशत भाग कार्बन उत्सर्जन से बना होता है, जिसे विश्व पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते (Paris climate change agreement) के तहत रोकने की कोशिश की जा रही है।

हालाँकि मात्र इन प्रयासों से अधिक सफलता मिल पाना संभव नहीं है, इसके लिये और अधिक बड़े स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है। यदि हम वर्तमान के कार्बन उत्सर्जन की दर को सीधा इसके आधे स्तर पर ले आते हैं, तब भी हम ई.ओ.डी. में मात्र 89 दिन या तीन महीनों की ही वृद्धि कर सकते है। इसके बावजूद हम दो महीने के घाटे की स्थिति में रहेंगे। स्पष्ट है कि इस दिशा में और अधिक गंभीरता से विचार किये जाने की आवश्यकता है।

तीव्र गति से होता क्षय

खाने के अपव्यय, भोजन की बर्बादी, वन संसाधनों पर अधिकाधिक निर्भरता, ये सभी ऐसे कारक हैं जो विश्व के प्राकृतिक संसाधनों में तेज़ गति से क्षय लाने में योगदान दे रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप आवश्यक संसाधनों की कमी, गरीबी और जीवों के विलुप्त होने संबंधी घटनाएँ बड़े स्तर पर घटित हो रही हैं। एक अनुमान के अनुसार, यदि विश्व उपभोग के वर्तमान स्तर को बनाए रखता है तो वर्ष 2030 तक स्थिति यह बन जाएगी कि हमें एक नई पृथ्वी की आवश्यकता होगी।

वो एक शाम

श्री सूर्यकांत चौधरी
स.ले.प.अ.

उजालों को अपने अंदर कर रही है शाम।
गुजरते वक्त के साथ और निखर रही है शाम।।
रिदा[1] चाँदनी की ओढ़े हुए।
हर लम्हा, हर तरफ बिखर रही है शाम।।
किसको खबर क्या कर रही है ये।
बिखर–बिखर के किसका तआकुब[2] कर रही है शाम।।
भीगी हुई जमीं पे, ठंडी–ठंडी हवा में।
पल–पल सफर तय कर रही है शाम।।
चहकने लगे पंछी, हो रहा उजाला।
'सूर्य' नए एक सहर[3] से मिल रही है शाम।।

शब्दार्थः-

रिदा – चादर

तआकुब – पीछा करना

सहर – सुबह, प्रातःकाल

नारी मुक्ति

श्री नितिन चौधरी
डी.ई.ओ.

अभी हाल तक यह समझा जाता था कि जीवन के युध्द में जिसको कि मनुष्य परिस्थितियों के विरुध्द लड़ता है, नारी की भूमिका द्वितीय पंक्ति की रहती है। यह बात निश्चय ही बड़ी महत्वपूर्ण है। किन्तु आज हम पुरुष और नारी में कोई भेद नहीं करते हैं जहाँ तक कि उनके दर्जे की समानता का संबंध है, नारी को भी मोर्चे अर्थात् प्रथम पंक्ति पर होने पर उतना ही अधिकार है जितना कि पुरुष को। जहाँ तक दोनों की क्षमता का प्रश्न है, यह सिध्द हो चुका है कि नारी की क्षमताओं का कुल योग पुरुष की क्षमताओं के कुल योग से कम नहीं होता। किन्तु, हम देखते है कि हमारे समाज में नारी की स्थिति वह नहीं है जो होनी चाहिए । समाज में नारी को पुरुष के साथ गौण स्थान प्राप्त है। जन्म से ही लड़का व लड़की के मध्य हमारे अधिकतर परिवारों में भेद किया जाता है। परिवार में प्राप्त पौष्टिक आहार का बड़ा भाग लड़के को चला जाता है उसको शिक्षा एवं उन्नति के अन्य अवसरों के मामलों में अधिक ध्यान दिया जाता है। जैसे ही बच्ची बड़ी होती जाती है प्रतिबन्धों की जंजीरे उस पर बराबर कड़ी और कड़ी होती जाती है। समय बीतते–बीतते उनमें हीनता की ग्रन्थि विकसित होने लगती है, और यह ग्रन्थि मृत्यु तक उसका साथ देती है। विवाद के बाजार में उसको केवल एक वस्तु की तरह समझा जाता है। दहेज के सौदे व्यापार के सौदों की भांति तय किये जाते हैं, जो अपर्याप्त दहेज लाती है उनको भांति–भांति के कष्ट सहने पड़ते हैं, और कभी–कभी मृत्यु भी। नारी जो कि हम सब की माँ है, उसको इस दीन स्थिति में धकेल दिया गया है। परिवार की बच्ची का जन्म एक निराशा का अवसर होता है जब कि लड़के का जन्म आनन्द और उत्सव मनाने का। सामाजिक जीवन का रथ एक पहिये से नहीं चल सकता किन्तु फिर भी न जाने क्यों दूसरे पहिये के महत्व की पहचान कम क्यों है? बहुत से घरों में महिलाएँ एक दासी से अच्छा जीवन

व्यतीत नहीं करतीं। उनको लकड़ी चीरने वाले और पानी खींचने वाले से बेहतर स्थान प्राप्त नहीं है।

''नारी! तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पगतल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुदंर समतल में।।''

क्या वह समाज जिसमें महिलाओं को ऐसा समझा जाता है, उन्नति कर सकता है? महिलाएं जनसंख्या का लगभग आधा भाग होती है। यदि यह आधा भाग अविकसित रह जाये, उसकी बढोत्तरी बीच में ही रुक जाए और जिसको जीवन को सम्पूर्ण बनाने वाले अवसरों के उपभोग की कमी हो तो ऐसे समाज से यह आशा करना अव्यावहारिक है कि वह अपनी पूर्ण क्षमताओं का विकास कर सकेगा। अविकसित व्यक्तियों से कोई देश महान नहीं बनता।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने अपने काल में बड़े ही संवेदनशील भावों से नारी की स्थिति को व्यक्त किया है:

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखो में पानी।''

पल-पल बदलती ज़िंदगी

सुश्री ममता
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

पल-पल बदलती ज़िंदगी,
न जाने कहाँ पे क्या हो ज़िंदगी।
ज़िंदगी का हर लम्हा खास है,
होगी तो जरूर इसमें भी बात है।

लाख मुसीबतें हो फिर भी चलती है,
न रुके हमेशा बढ़ती रहती है।
ज़िंदगी के लम्हों को सहेजना है जरूरी,
क्योंकि उन लम्हों के बिना वो है अधूरी।

कुछ अच्छे पल कुछ कडवे पल,
फिर भी जाने क्यों है हलचल।
हर कोई भागना चाहता है,
हर कोई ज़िंदगी को जीतना चाहता है।

इसी का नाम है क्या ज़िंदगी,
कुछ अपनी कुछ पराई सी ज़िंदगी।
बस यूँ ही चलती रहती है ज़िंदगी,
खुदा की खुदाई या बंदे की बंदगी।

नाम कुछ भी हो तेरा ज़िंदगी,
फिर भी कुछ तो है जरूर
कुछ खास है तुझमे भी ऐ ज़िंदगी,
जो हर बंदे को है तुझपे गुरूर।

इंसान ही इंसान को सिखा रहा है,
जाने कैसे किसको जीना है
ये एक दूसरे को है बता रहा है,
फिर भी तेरी सीख के बिना तो सब यूं ही गवां रहा है।

क्यों नहीं इंसान समझ जाता
क्यों वो ज़िंदगी को जी नहीं पता
चंद लम्हो का कारवां है ज़िंदगी,
इसी का नाम तो है पल-पल बदलती ज़िंदगी।

'बेटा'

श्री डी. के. ओझा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक पिता अपने बेटे के आलीशान ऑफिस में जाता है,
अपने बेटे को सामने देख के पीछे खड़ा हो जाता है,
बड़े फ़क्र से बेटे के कंधे पर हाथ रख के पूछता है,
बेटा दुनिया में सब से ताकतवर आदमी कौन है ?
बेटा जल्दी से जवाब देता है ;

''मै''

पिता का दिल दुखने लगा ; वापस पूछा अपने बेटे से ;
बेटा दुनिया मै सब से ताकतवर आदमी कौन है ?
बेटा का वही जवाब मिला,

''मै''

पिता के चहेरे का रंग उड़ गया और उदास हो गए।
पिता दुखी हो के, आखों में आसू के साथ बाहर निकलने लगा।
बेटे के कंधे से हाथ उठा लिया, और दरवाजे की तरफ चलने लगा,
पीछे मुड़कर वापस यही पूछा, बेटा दुनिया में सबसे ताकतवर आदमी कौन है ?
बेटे ने बड़े अदब से जवाब दिया

''आप''

पिता एकदम हैरान हो गए, और बदलते विचार को देखकर हैरानी से सवाल पूछा,
दुनिया में ताकतवर आदमी तो ''तू'' था और अब मेरा नाम क्यों ले रहा है ?

बेटा आखों में आँसू के साथ बोला ;
पापा जब आपका हाथ मेरे कंधे पर था तब ''मै'' दुनिया का सबसे ताकतवर आदमी था ;
जैसे ही आपने अपना हाथ मेरे कंधे से हटा लिया ''आप'' दुनिया के सबसे ताकतवर आदमी हो गए।
पापा के आँखों में आँसू आ गए, और बेटे को गले लगा लिया ।

परिवर्तन

श्री अनुराग श्रीवास्तव
स.ले.प.अ.

यदि सपना है स्वर्णिम कल का, परिवर्तन तो लाना होगा।
इच्छा है नव आयामों की, पंखो को फड़फड़ाना होगा।
यह व्याप्त समाजों में विकार, यह धन की खातिर हाय-हाय,
भुखमरी, गरीबी, त्रासदियाँ, कुछ तो इनका होगा उपाय।
हाथों को अपने जगन्नाथ का, रूप आप देना होगा,
खुद कठिन परिश्रम के बूते, अपना हिस्सा लेना होगा।
संकल्प स्वयं करना होगा, फिर स्वयं उसे पाना होगा,
यदि सपना है स्वर्णिम कल का, परिवर्तन तो लाना होगा।

यदि हम अपने ही स्तर पर, कुछ श्रम करने का यत्न करें,
हम खुद पर ही विश्वास करें, कुछ नवनिर्माण प्रयत्न करें,
विश्वास दिलाता हूँ इतना, कुछ तो रंगत यह लाएगा।
स्थितियाँ कुछ बदलेंगी, परिवर्तन के सुमन खिलाएगा।
तो उठो युवाओं, कमर कसो, कुछ करके दिखलाना होगा।
यदि सपना है स्वर्णिम कल का, परिवर्तन तो लाना होगा।

समुदायों की प्राचीरों को, अब आग लगाकर भस्म करो।
इसके काले इतिहासों को युग-युग की खातिर दफ्न करो।
हर हिन्दू को हर मुस्लिम के सुख-दुख में काम आना होगा।
हर वामन को, हर एक दलित के थाल में ही खाना होगा।
इन जाति, धर्म के मुद्दों से उठ कर ऊपर आना होगा।
यदि सपना है स्वर्णिम कल का परिवर्तन तो लाना होगा।

भगवान की सेवा

श्री शैलेश्वर मलिक
डी.ई.ओ.

'भगवान' इस शब्द को जानना जितना सरल है उसके भाव को समझना शायद उतना ही कठिन है। भौतिक स्तर पर अगर बात की जाए तो भगवान पाँच अक्षरों के मेल से बना शब्द है। भ–भूमि, ग–गगन, व–वायु, आ–आग तथा न–नीर अर्थात पाँच तत्वों के मेल को भगवान की संज्ञा दी गई है। भगवान द्वारा निर्मित इन्हीं पाँच तत्वों के मेल से एक अन्य रचना की उत्पति हुई जिसे मनुष्य कहा जाता है। यदि बौद्धिक स्तर की बात की जाए तो भगवान की संज्ञा को विभिन्न मापदण्डों में विभाजित किया गया है परंतु वास्तव में भगवान को न तो आज तक किसी ने देखा है ना ही इसे किसी निश्चित सीमा में बांधा जा सकता है।

प्रत्येक मनुष्य भगवान को लेकर एक अलग धारणा रखता है तथा अलग–अलग विधि द्वारा उसकी पूजा अर्चना करता है। भगवान को लेकर किसी प्रकार वाद–विवाद करना मेरी मंशा कतई नहीं है। यहाँ केवल कुछ विचार हैं जो कि आप सबके सामने व्यक्त करना चाहता हूँ। भगवान को पाने के लिए लोग भिन्न–भिन्न प्रकार से उसे खुश करने का प्रयास करते है विभिन्न धर्मों में विभिन्न विधि–विधान दिए गए है जिसका लोग पालन करते है। परंतु उन्ही विधि–विधानों में यदि कुछ विधि–विधान ऐसे हैं जो कि आप केवल पुरानी परम्पराएँ समझ कर निभा रहे है तथा उन परंपराओं की धारणाओं का अंधानुकरण किया जा रहा है। यहाँ बात किसी एक विशेष धर्म की नहीं हो रही यहाँ बात हो रही है हर उस अंधविश्वास की जिसे लोग भगवान के नाम पर करते हैं।

धार्मिक स्थानों पर अक्सर पंडितों तथा अन्य मठाधिकारियों के समक्ष लोगों को इस प्रकार झुकते देखा है मानों उन लोगो ने साक्षात भगवान के दर्शन उनमें कर लिए हों उनके द्वारा बताए गए उपाए वे बिना सोचे समझे ऐसे करते है मानों यदि यह उपाय न किया गया तो उनकी आने वाली कितनी पीढ़ियों को उसका बुरा फल भोगना पड़ेगा। तीर्थ स्थानों पर जाकर लोग अपने बुजुर्गों के लिए पूजा पाठ करते है कितने रुपए वहाँ बैठे पंडों को दान दक्षिणा में दे देते है बिना सोचे कि क्या केवल ये सब करने से उनके पूर्वजों की आत्मा को शांति मिल जाएगी तो उसका जवाब होगा बिल्कुल नहीं। जिन बुजर्ग माता–पिता को जिंदगी भर बच्चों ने अपने उपर केवल बोझ समझा, उनकी जरूरतों

को पूरा करना तो दूर उनकी जरूरतों को समझने की कोशिश भी ना की। आज उन्ही बुजुर्गों के लिए ये पिंड दान, श्राद्ध आदि करने का क्या अर्थ और वो भी कुछ धार्मिक ठेकेदारों के कहने मात्र से। मनुष्य के भीतर विवेक नाम की शक्ति भगवान ने इस लिए प्रदान की है कि क्या सही है व क्या गलत मनुष्य इस बात का चुनाव कर सके। अक्सर सुनने में आता है कि विभिन्न वस्तुएँ पंडितों मंहतो आदि को दान की जाए तो उद्धार होगा परंतु मै यहाँ पूछना चाहता हूँ कि उस दान दक्षिणा से किसका उद्धार होगा आपका अथवा उन धर्म के ठेकेदारों का जिन्होने भगवान के नाम पर बड़ी–बड़ी दुकाने खोली हुई है, यहाँ प्रसाद भी उनका अपना होता है तथा प्रसाद ग्रहण करने वाला बनाया गया भगवान भी उनका होता है।

एक ऐसी ही घटना मैंने भी एक मंदिर में देखी। मंदिर के सामने बाहर ही पंडित जी बैठे हुए थे। लोग आ जा रहे थे तथा पूजा–पाठ भी कर रहे थे। यह मंदिर एक रेलवे स्टेशन पर बनाया गया था जहां अक्सर यात्रियों की भीड़ होती थी पर अपनी यात्रा की जल्दी में इक्का दुक्का लोग ही मंदिर में माथा टेक रहे थे जो लोग पूजा के लिए आ रहे थे वे अपनी इच्छानुसार कुछ चढ़ा भी रहे थे। चूंकि इस प्लेटफार्म पर कोई छायादार शेड नही था इस लिए लोग जहां भी थोड़ी छाया दिखाई दे वहीं खड़े हो रहे थे, इसी प्रकार कुछ लोगों ने अपना सामान मंदिर के आगे रख दिया। वह पंडित जो कि उस मंदिर का ही था उसने लोगो को वो सामान उठाने को कहा बिना सोचे समझे कि लोग केवल धूप से बचने के लिए वहाँ बैठ रहे हैं। इसी तरह कुछ देर में कुछ बुजुर्गों का समूह जो कि खुद भी किसी तीर्थ स्थान पर जा रहा था वहाँ आ पहुंचा, उनमें कुछ बुजुर्ग औरते भी थी जो कि गर्मी की वजह से बेहाल थी, ज्यादा देर खड़े भी नहीं हो पा रही थी। उनमें से एक औरत उस स्थान पर बैठ गई जहां पर मंदिर की ओर से केले का वृक्ष लगाया गया था, जहां आ कर लोग जल अर्पित करते हैं। तभी वह पंडित जो कि खुद भी बुजुर्ग था उसने बिना सोचे समझे उस औरत पर चिल्लाना शुरू कर दिया। वह औरत बिना कुछ बोले वहाँ से उठ गई क्योंकि यहाँ पर बोलने वाला कोई ओर नहीं स्वयं खुद को धर्म का रक्षक कहने वाला पंडित था परंतु आप खुद बताइए जो इंसान दूसरे इंसान का दर्द ना समझ सके तथा किसी प्रकार सहायता न कर सके वह मनुष्य सत्कार योग्य कैसे हुआ? हम लोग क्यों ऐसे लोगो के कहने से बिना सोचे समझे ऐसे सब कार्य करते है जिनके पीछे का तर्क स्वयं नहीं जानते। मंदिरों में लोगो की मिठाई, फल, दूध व अन्य खाद्ध पदार्थों पर ढेर लगाते देखा है बिना ये सोचे कि आखिर भगवान क्या केवल किसी ऐसे व्यक्ति की सेवा करने से प्रसन्न हो जाएंगे जो सेवा का अर्थ नहीं जानता। ईश्वर सेवा का अर्थ तो में नही जानता परंतु केवल इतना जनता हूँ कि यही दान दक्षिणा उन लोगो को दी जाए जो कि सच में जरूरतमंद है तो अवश्य ही आपके बड़े–बुजुर्ग व भगवान प्रसन्न होंगे क्योकि आप भगवान की बनाई सृष्टि के मनुष्यों की सहायता कर रहे है और यही शायद सही अर्थों में भगवान की सेवा होगी।

तिरंगा लहराता हैं शान से

श्री राममेहर
डी.ई.ओ.

तिरंगा लहराता है अपनी पूरी शान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से।।

आज़ादी के लिए हमारी लंबी चली लड़ाई थी।
लाखों लोगों ने प्राणों से कीमत बड़ी चुकाई थी।।
व्यापारी बनकर आए और छल से हम पर राज किया।
हमको आपस में लड़वाने की नीति अपनाई थी।।

हमने अपना गौरव पाया, अपने स्वाभिमान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से।।

गांधी, तिलक, सुभाष, जवाहर का प्यारा यह देश है।
जियो और जीने दो का सबको देता संदेश है।।
प्रहरी बनकर खड़ा हिमालय जिसके उत्तर द्वार पर।
हिंद महासागर दक्षिण में इसके लिए विशेष है।।

लगी गूँजने दसों दिशाएँ वीरों के यशगान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से।।

हमें हमारी मातृभूमि से इतना मिला दुलार है।
उसके आँचल की छैयाँ से छोटा ये संसार है।।
हम न कभी हिंसा के आगे अपना शीश झुकाएँगे।
सच पूछो तो पूरा विश्व हमारा ही परिवार है।।

विश्वशांति की चली हवाएँ अपने हिंदुस्तान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से।।

दहेज प्रथा : एक बुराई

श्री प्रीतम
डी.ई.ओ.

दहेज प्रथा भारत में बहुत बड़ी सामाजिक बुराइयों में से एक है आए दिन दहेज के कारण मृत्यु के समाचार सुनने को मिलते हैं। इस दहेज के राक्षस द्वारा अनेक परिवारों की बहुत सी बेटियाँ उनसे छीन ली गई है। हमारे समाज में प्रचलित भ्रष्टाचार के कारणों में से दहेज भी एक कारण है। लोग गैर–कानूनी रूप से धन संचित करते हैं क्योंकि उन्हें अपनी पुत्रियों की शादी में दहेज का भारी खर्च वहन करना पड़ता है। यह बुराई समाज को खोखला कर रही है और वास्तविक प्रगति अवरुद्ध हो गई है।

दहेज प्रथा वर्तमान भारतीय समाज की ही प्रथा नहीं है, यह हमें विरासत में मिली है। हमारी पुराण कथाओं में माता–पिता द्वारा अपनी पुत्रियों को अच्छा दहेज दिये जाने का उल्लेख है। यह प्रथा किसी न किसी रूप में विदेशों में भी प्रचलित थी। सेल्यूकस निकेटर ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपनी पुत्री के विवाह में काफी आभूषण, हाथी और अन्य सामान दिया था। दूसरे देशों में भी यह प्रथा है कि माता–पिता नव–विवाहित जोड़े को उपहार और भेंट देते हैं। मातृ प्रधान प्राचीन समाजों के अतिरिक्त लगभग सभी समाजों में यह प्रथा प्रचलित थी।

वास्तव में देखा जाए तो इस प्रथा में कोई खराबी नहीं है। यदि इसको सीमा के अंतर्गत रखा जाए तो यह स्वस्थ रिवाज है। नकदी या उपहार के रूप में नव–विवाहित दंपति को कुछ दिया जाता है उससे वे आसानी से अपना जीवन प्रारम्भ कर सकते हैं। किन्तु समस्त बोझ लड़की के माता–पिता ही क्यों उठाएँ? यह प्रथा बुराई इसलिए बन गई है क्योंकि यह अपनी सीमा पार कर गई है। जबकि पहले दहेज प्रेम और स्नेह का प्रतीक था। अब तो यह प्रथा

व्यापार और सौदेबाजी हो गई हैं। सभी भावनात्मक पहलुओं को समाप्त कर इसने निंदनीय भौतिकवादी रूप ग्रहण कर लिया है। घृणास्पद बुराई के द्वारा भारतीय समाज के भवन को ही खतरा पैदा हो गया है।

भारतीय समाज में इस प्रथा के प्रचलन का पहला कारण महिलाओं की पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता है। अधिकतर पत्नियाँ अपनी जीविका के लिए पति पर पूर्णरुपेण निर्भर रहती है और पति इसकी कीमत अपनी पत्नी के माता–पिता से मांगता है। दूसरे, महिलाओं को समाज में निम्न स्तर प्रदान किया जाता है। उनको वस्तु समझा जाता है। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में कौमार्य पवित्रता पर बहुत बल दिया जाता है। भारतीय माता–पिता को अपनी पुत्री का विवाह एक विशेष समय पर किसी उपयुक्त लड़के के साथ करना होता है, चाहे कितना ही मूल्य देना या त्याग करना पड़े। महात्मा गांधी ने दहेज प्रथा के बारे में कहा था कि:–

‘‘जो भी व्यक्ति दहेज को शादी की

जरूरी शर्त बना देता है, वह

अपने शिक्षा और देश की

बदनामी करता है, और साथ ही पूरी

महिला जाति का भी अपमान करता है।’’

आखिर क्यों ?

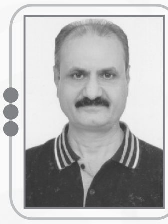

श्री वी.डी. पंडया
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मैंने एक कविता लिखी है जोकि हिन्दी भाषा से संबन्धित है। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा के प्रति कितनी जागरूकता है, इस वास्तविक पहलू को उजागर करने की मेरी एक कोशिश इस कविता द्वारा, शीर्षक है :

आखिर क्यों ?

सरल है सुबोध है फिर भी क्यों नहीं अपनाते हिन्दी भाषा
हिन्दी प्रांजल है पावन भी फिर क्यों है इतनी निराशा
हिन्दी-दिवस, हिन्दी सप्ताह या पखवाड़ा चाहे हम मनायें,
राष्ट्र के सशक्त माध्यम को अविरत क्यों न अपनाये आखिर क्यों ?

हिन्दी भाषा सरल है लिखने में, पावन है बोलने में, कर्णप्रिय भी,
व्याकरण में है उत्तम, उच्चारण में है सरलता, संस्कृत इसकी माता
अन्य भाषाएँ है हिन्दी की बहना
भारतीय संविधान का है ये गहना
जो भारत माता ने है पहना
राष्ट्र की पहचान, राष्ट्र की आन, बान, शान और गुरूर है हिन्दी भाषा
पुनीत पावन वसुंधरा सम स्वदेश की राजभाषा,
समुंदर जैसी विशालता और शांति की परिभाषा
मेघधनुष के रंगों जैसी विविधता सभर है राष्ट्र की भाषा
करती है साकार सभी की यह प्रिय मंगल आशा
फिर भी हिन्दी के प्रचलन के प्रति इतनी क्यों है निराशा ?
तो आओ हम सब पूछे अपने आप से, राष्ट्र के ऐसे सशक्त माध्यम को हिन्दी सप्ताह या
हिन्दी पखवाड़े तक सीमित न रखकर, राष्ट्रभाषा को हम अविरत क्यों नहीं अपनाते,
हम अविरत क्यों नहीं अपनाते, आखिर क्यों? आखिर क्यों? आखिर क्यों?

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

श्री अश्विन धिनोजा
लेखापरीक्षक

प्रस्तावना :

यह भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ही थे जिन्होंने सबसे पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने का विचार दिया था। इस प्रकार से वे पूरे भारत के साथ इस दृष्टिकोण को संपूर्ण रूप से साझा करना चाहते थे जो पूरे विश्व के लिए उत्पन्न हुई थी। संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) ने इस प्रस्ताव को पसंद किया और 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी गई। यह वर्ष 2015 में पहली बार मनाया गया था।

योग की उत्पत्ति

माना जाता है कि भारतीय पौराणिक युग से योग की जड़े जुडी हुई हैं। ऐसा कहा जाता है कि यह भगवान शिव थे जिन्होंने इस कला को जन्म दिया। शिव, जिन्हें आदि योगी के रूप में भी माना जाता है, को दुनिया के सभी योग गुरुओं के लिए प्रेरणा माना जाता है।

सामान्य तौर पर यह माना जाता है कि यह उत्तर भारत में सिंधु–सरस्वती सभ्यता थी जिसने 5000 साल पहले इस शानदार कला की शुरूआत की थी। ऋग्वेद में पहली बार इस अवधि का उल्लेख किया है। हालांकि योग की पहली व्यवस्थित प्रस्तुति शास्त्रीय काल में पतंजलि द्वारा की गई है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को क्यों मनाया जाता है ?

भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, जिन्होंने योग दिवस मनाने का विचार प्रस्तावित

किया, ने सुझाव दिया कि यह 21 जून को मनाया जाना चाहिए। उनके द्वारा सुझाई गई इस तारीख का कारण सामान्य नहीं था। इस अवसर को मनाने के लिए प्रस्तावित कुछ कारण हैं। 21 जून उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन है और इसे ग्रीष्मकालीन अस्थिरता कहा जाता है। यह दक्षिणायन का एक संक्रमण प्रतीक है जिसे माना जाता है कि यह एक ऐसी अवधि होती है जो आध्यात्मिक प्रथाओं का समर्थन करती है। इस प्रकार योग की आध्यात्मिक कला का अभ्यास करने के लिए एक अच्छी अवधि माना जाता है।

इसके अलावा किंवदंती यह है कि इस संक्रमण काल के दौरान भगवान शिव ने उनके साथ योग की कला के बारे में ज्ञान साझा करके आध्यात्मिक गुरुओं को प्रबुद्ध किया। इन सभी बिंदुओं को संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) ने माना था और 21 जून को अंततः अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी गई थी।

निष्कर्ष

अच्छी बात यह है कि श्री मोदी और यूएनजीए ने ही केवल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में चिह्नित नहीं किया बल्कि जब यह दिवस आया तो इसे सफल बनाने के भी कई प्रयास किए। पहला योग दिवस भारत में बड़े पैमाने पर मनाया गया। दुनिया भर के कई उल्लेखनीय व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। तब से यह देश और साथ ही दुनिया के अन्य भागों में बड़े जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

वो सपनों की दुनिया

श्री अभिनव कुमार
स.ले.प.अ.

दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं
उस दूर देश में जहां हो खुशी
ना हो कोई दर्द ना हो उदासी
जहां सूरज की पहली किरण आए मेरे आँगन पर
जहां फूलों की खुशबू से महक उठे अंतरमन
दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं
दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं।।

जहां मिले मन को वो शांति
जो अब अपनी जागीर नहीं
जहां मिले मेरा जीवन
जिसको जीना बेकार नहीं
दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं
दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं।।

उस छोटी सी दुनिया में
जहां ना लोग झगड़ते हो
जहां हो प्यार ही प्यार भरा

जहां हो इंसानियत अभी भी जीवित
वही हो घर संसार मेरा
दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं
दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं।।

जहां हवा के बहने से
तन मन सुगंधित होता हो
जहां प्रकृति की सुंदरता से
नयनों को तृप्ति मिलती हो
दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं
दिल करता है गुम हो जाऊँ कहीं।।

ना लौट कर आना हो मुझको
ना ढूँढने वाला हो कोई
बस मैं और मेरी छोटी सी दुनिया हो
दिल करता है बस जाऊँ वहीं
दिल करता है गुम हो जाऊँ वहीं
दिल करता है गुम हो जाऊँ वहीं।।

हिन्दी का अ-वैश्वीकरण

श्री हरीश कुमार
स.ले.प.अ.

औपनिवेशवाद से आजाद हुए हमें 71 वर्ष हो गए परंतु हमरे मस्तिष्को में अंग्रेजों द्वारा बोया हुआ वो हीन भावना का विचार आज तक जमा हुआ है। आज भी हम पश्चिमी सभ्यता को ज्यादा तवज्जो देते है एवं ब्रांड संस्कृति भी कहीं ना कहीं इसका पूर्ण समर्थन करती है। यदि भाषा की भी बात की जाए तो वैश्वीकरण के दौर में अंग्रेजी का हर जगह साम्राज्य स्थापित हो चुका है। भारत जैसे हिन्दी भाषी देश में भी हम मातृभाषा हिन्दी से अधिक अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता देते है। बच्चों को अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में भेजना, अंग्रेजी भाषा को दैनिक दिनचर्या के प्रयोग में लाने को प्रोत्साहन देना व अंग्रेजी भाषा के प्रयोग का कुलीन वर्ग समझा जाना इत्यादि कारणों की वजह से हिन्दी भाषा कहीं छिप सी रही है। जैसे क्रिकेट के खेल में राहुल द्रविड़ की प्रतिभा सचिन तेंदुलकर के आगे परछाई में ही रह गई, उसी प्रकार हिन्दी भी आजकल के दौर में अंग्रेजी भाषा की परछाई समान ही प्रतीत होती है। यह भारतीय मानसिकता ही है जो हमारे हिन्दी समाज व संस्कृति को विनाश की ओर ले जा रही है। रूस के राष्ट्रपति हमेशा रुसी भाषा में ही बात करते है; स्पेन, जापान आदि देश अपनी भाषा में ही संचार करते है तो हम अंग्रेजी से इतने प्रभावित क्यों रहते हैं? हिन्दी भाषी को अनपढ़ गँवार व अंग्रेजी भाषी को शिक्षित कहने का मुझे तो तर्क समझ में नहीं आता। वास्तविकता तो यह है कि हिन्दी भारतीय है एवं अंग्रेजी इंडियन हिन्दी ग्रामीण तो अंग्रेजी शहरी।

चाइनीज मंदारियन, स्पेनिश व अंग्रेजी के बाद विश्व में चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी ही है । उत्तरी भारत में तो हिन्दी को राजकीय भाषा का भी दर्जा दिया गया है संविधान के अनुच्छेद 343(1) में भी हिन्दी के प्रयोग को आधिकारिक भाषा के रूप में दर्जा दिया गया है। मेरे विचार में सभी भाषाएँ एक समान हैं परंतु एक भाषा को सर्वोच्च करार करके दूसरी को हीनता के भाव से देखना भी उचित नहीं है। 'अनेकता में एकता' भारत की विशेषता सभी 22 मुख्य भाषाएँ व अन्य स्थानीय भाषाओं की एकता का ही प्रमाण है। फिर भी कुछ पंक्तियाँ मुझे याद आ जाती हैं, जो आज के समाज में हिन्दी भाषा की स्थिति को स्पष्ट करती हैं:-

कुछ विचार कौंधे खाली पड़े दिमाग में,
सोचा क्यूँ ना कविता का रूप दूँ इसे
आवाज लगाई हिन्दी को काफी ढूंढा,
जाकर मिली सुनसान खंडहर में ।।

खटिया डाल पसरी हुई थी कोने में,
कदमों की आहट से घबराकर जग उठी।
चकित होकर मैं भी पूछ बैठा,
यूं निठल्ली क्यों लेटी पड़ी हो?

बौखला उठी हिन्दी व बोली,
कस चुके हो मेरी जुबां पर लगाम,
डाल चुके हो मेरे पैरों में बेड़ियाँ,
बस सूली पर चढ़ाना शेष है।
ना ही काम की कोई चिंता,
ना किसी के कदमों की कोई आहट है,
ज़िंदगी सांस लेने भर रह गयी है ।।

मान बैठे हो तुम, भाषाओं की भीड़ में एक ऊब सी हिन्दी को,
कड़वी भी लगती होगी चीखने में,
गुमनाम भी घोषित कर चुके होंगे मुझे।
भूल चुके हो मेरी अहमियत तुम,
मैं हूँ वही बूढ़ी बरगद का पेड़,
सुस्ताते हो तुम जिसकी छाया में ।।
चकाचौंध की दुनिया से दूर,
मान चुके हो मृत मुझे,
मौन हूँ मैं, मृत नहीं।
मौन की भी अपनी अभिव्यक्ति है,
गुमनामों की भी अपनी बस्ती है ।।

लेटी रहती हूँ उदास, उन अंधेरी रातों में,
कातती हूँ, बुनती हूँ
अपने हिस्से की चमक।
कभी उदास होंगी जब रातें तुम्हारी,
या सो जाए अन्य भाषाओं का आसमाँ,
थाम लेना उँगली मेरी
अनकटी रातों के नभ से,
चमकूँगी तुम्हारे हिस्से का चाँद बनकर ।।

ए.जी.ए.ओ.आर.सी. द्वारा आयोजित कार्यक्रम में
भाग लेते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय

हिंदी पखवाड़ा समारोह में हिन्दी अधिकारी का सम्बोधन भाषण

ए.जी.ए.ओ.आर.सी. द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिता में
भाग लेते हुए अधिकारी व कर्मचारी

हिन्दी पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते हुए
कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारी

ए.जी.ओ.आर.सी. द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित श्री यशवंत कुमार, प्रधान महालेखाकार (सां.एवं सा.क्षे.लेप.), श्री शैलेन्द्र विक्रम सिंह, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), श्री संदीप पांडुले, उपमहालेखाकार तथा श्री एन एस अय्यर, वरि. उपमहालेखाकार

सांस्कृतिक कार्यक्रम में उपस्थित कार्यालय के अधिकारीगण

कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका 'दांडी' के द्वितीय अंक का विमोचन

पत्रिका विमोचन समारोह में अधिकारियों द्वारा पत्रिका का अवलोकन

हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के उद्‌घााटन समारोह में
प्रधान महालेखाकार महोदय का भाषण

हिंदी पखवाड़ा समारोह में दोनो कार्यालयों के
प्रधान महालेखाकार एवं उपमहालेखाकार महोदया का सम्बोधन